

२.७०

क.२ व.७३ पु.३

नहुषनाटकपत्रे ६०
अंक १३०

५ नाटक

न. ना.
१

श्रीगोपीजनवद्वभोविजयते॥ दोहा॥ नागरनटपटपीतधरजिमिघनविज्जुविलास॥ भव
आतपकोभयहरनहोतसुखीसवदास॥ १॥ मंगलाचरणानंठेजांटी॥ कवित्त॥ मेचकव
रनवरजीवननिवासथरवकुलनकीलसतिसुंदरपदमदामसहितसहायपरभंजनकीग
तिधरेअंवरविराजैप्रगटावैतियतनकाम॥ दिग्हरवित्तमहासारंगधनुसधरेवरसतस
रपरपूरैजनअभिराम॥ गिरिधारदासदेविनीलकंठनृत्यकरैअसोवसोआयमेरेमन
कोउघनस्याम॥ २॥ अपिच॥ सवैया॥ नितपावतसेसमहेससुरेससेपावतवांछितभ
त्यओभट्या॥ श्रुतिकीरतिविश्रुतजोसुमहाजगपातकबंदनिपातककृत्या॥ भवतार
नकोगिरिधारनजामधिआनैकोकंधकीधरीसत्या॥ वरआनंदधाममुदामगुना
करस्यामकोनामहतैसबहत्या॥ ३॥ नान्यन्तेसुधधारः॥ सबकोउमोनवैकैहमारी

Brihannirupasth
Shrimad Gopabandhi Vahar

वातसुनौ॥विविधविविधचंदारकचंदवंदितचंदवनवद्वभव्रजवनितावनजवनीवि
भाकरवंसीधरवदनविधुचकोरवारुचतुरवृडामनिचरचितचरणपरमहंसप्रसंसमा
नमायावादविध्वंसकरश्रीमतवद्वभाचार्यवंसश्रवतंसश्रीगिरिधरजीमहराजाधि
राजनेमोकोंआजादीनीहै॥सोमैंगिरिधरदासकृतनहुसनाटकआरंभकरौहों॥त
वआगेवढिहाथजोरिकै॥इहांसभसुभसुभ्यसमाध्यछअपनेअपनेपछकेरछन
मैपरमविछनदछहैंइनकेसमछयहढिठार्डहैतथापिकृपाकरिसुनो॥अप्यय॥ सब
जदपिमातुपितुभातविज्ञगुनगनअधिकार्ड॥तदपितोतरेबोलसुनतसिसुकेमन
लाई॥जदपिप्रकासकआपसूरजगऔरनदजा॥तदपिभक्तिजोदीपदेततेहिमान
तपूजा॥तिमिजदपिसवैपंडितसुघरगुनविनकोउनलेखिये॥यहतदपिहमारीनाख

न. ना.
२

विधिवितैदैंकै अवटेखिये ॥४॥ तव पारिपार्श्वक ॥ भाव ॥ अहोतु मारी वात सों मै रेगा तमें आ
नंदन हीं समात है ॥ ता सों कोन श्री गिरिधर जी महाराज हैं सो वनाओ ॥ सूत्रधार ॥ सानंद ॥
अहोतु मने नही जाने ॥ तव सामुहें देखिकै ॥ वह सिंहासन पै सूरज समान तेज मान चंद्र स
मान सीतल सुभाव मंगल समान मंगल सा प्रबुध समान बुध गुरु समान गुरु कवि समा
न कवि सप्तम गुरु सों रहित विराजै हैं ॥ छप्पय ॥ श्रुति उद्धारक मीन कमठ निजर कुल
जय कर ॥ महि उद्धारन वराह भक्त भय हराना हर ॥ असुर मोह कर वटुक दुष्ट मद हर
न पर सुधार ॥ धरमधीर राघु वीर सीरधर व्रज जन प्रिय वर ॥ बुध सदा अहिसार निधरन क
लकी कलिकलम सहारन ॥ गिरिधर समद सव प्रधर प्रगट गिरिधर लाल कृपा करन ॥
पारिपार्श्वक ॥ तुम ने जै से कृपा करि श्री महाराजाधिराज को दरसन करयो तै से कृपा क

२

रि नारक हृदि खायो चाहिये ॥ **सवैया** ॥ थावर जंगम अछि रची विधि न्यारी करी सब हीन
 की रीतै ॥ ता मै सिरोम निमान वकोतन देवहु गावत जागु नगीतै ॥ विद्यावनी सिगरी इ
 हि हेत विचारि कै जो मुख सार प्रतीतै ॥ सोई घरी अहै कंचन की धन जोर सकी चरचामधि
 वीतै ॥ **६ ॥ सूत्रधार ॥** घर सों सुघर घर नी कों बुलाय कै मै या मै प्रव्रत होइ हों ॥ यह कहि ने
 पथ्य की ओर देखि कै कस्यौ ॥ अरी यहाँ आइ ॥ तव प्रवि सि कै नटी ॥ आर्य पुत्र कहा आजा ॥
सूत्रधार ॥ दोहा ॥ जा विधि राजानु सनै कियो स्वर्ग को राज ॥ सो नारक चाहत करन हुकु
 म कियो महाराज ॥ ७ ॥ सो तू सावधान होय कै काख कों साध ॥ नटी ॥ इत नै मै ॥ ने पथ्य
मै ॥ अरेशै लूया धम ॥ **सवैया** ॥ जथा श्रुति मै वरन्यो विसतारत था हय मेध करै सतवा
 र ॥ हजारन पुन्य कै पाप दहै गिरिधारन पूजै अनेक प्रकार ॥ मिलै तव आसन इंद्र को

जो आजा ॥

न. ना.
३.

स्वर्गमें आइ करै सुरचंद जुहार ॥ कहै तिहि बैठि है मानव छुद्र अरे नटपापी गवांर लवा
र ॥ ८ ॥ सूत्रधार ॥ कर न दै कै ॥ सवैया ॥ गोर सरीर अवीर से लोचन मस्तक मैं कं सुमीरव
साए ॥ सीस किरीट न फीसल सै विवि कुंडल कान न रत्न जराए ॥ श्री गिरिधारन केवल सों
वधि वृत्रा सुरै सव दै तन साए ॥ मोवतियाँ सुनिको पभरो सुर नायक आवत वज्र उठाए ॥
९ ॥ दोहा ॥ यह हम सों सव विधि वडो निजर कुल को छत्र ॥ अव इतरहनो उचित न हिं
ता सों चलु अन्यत्र ॥ १० ॥ यह कहि दोड़ि न करे ॥ इति प्रस्तावना ॥ तव प्रविश्यो इंद्र ॥ अरे शै
ल आधम ॥ यह कहत फिर न लाग्यो ॥ इतने में ॥ ने पथ्य मैं ॥ सवैया ॥ देखहु तो विपरीत ता
काल की जो करता रह अग्यता ठानै ॥ उंचो सिंह सन देइ अघी क हं धर्म धरै तेहि दारि
दसानै ॥ मायावली गिरिधारन की जिहि नैन सहस्र न सो पहिचानै ॥ कारि कै ब्राह्म

३.

मस्तक कौंयह आपुने कोंधरमातमामानै ॥ ११ ॥ इंद्र ॥ समय ॥ करन टैंकै ॥ कविता ॥ भलो हूकर
तआय विपति परत सीस यह विपरीत रीत विधिकी कुचाली सी ॥ लोक सो कह्यो हरि असु
र को असुत उ कठी ब्रह्म हत्या दीह सों सलेन चाली सी ॥ मेरे जान मेरी जान लेन पाछे आ
वति है सुललिए को पभरी प्रलय कपाली सी ॥ कुमतिकलंकि निकुचालि निकुचैल कूर
काल सी कएल काल रतिकी सी काली सी ॥ १२ ॥ यह कहि बल्यो ॥ तव ॥ इंद्र ॥ आत्मगत ॥
दोहा ॥ एकवार माख्यो गुरु हित वविधि मेख्यो ताप ॥ अवदूजी हत्या लगी हाकि मिजै है पा
प ॥ १३ ॥ यह कहि निकख्यो ॥ तव प्रवि सी ब्रह्म हत्या ॥ धृष्य ॥ गलित गाल सव गलित चर्म
पद खलित धरत महि ॥ पीरे के स ॥ मे सलेन स्वांसहि निमिवर अहि ॥ जएग सित अनिघी
न धईत न धई दुख दपन ॥ नैन लाल विकएल वरन कारे भय दरसन ॥ दुर्गंध मरीम ध

कु

रीसरिसमरीधूरिमें कठिनचित ॥ मुखकटुकवोलधरुधरु कहतिवनीब्रह्महत्याहसित ॥ १४
 ब्रह्महत्या ॥ अरेनिजमुखनिजप्रसंसकन्तसंसत्रासनवधकरनवोरकहोंभाग्योजाय
 है ॥ यहकहतखलितनृत्यकियो ॥ फेरनिकरी ॥ तवप्रविसे ॥ जयंत और कार्तिकेय ॥ संवैया ॥
 भूषनभूषितअंगअनंगसोएजैकस्योसिरसुंदरफेटा ॥ कुंडलकाननमेंचमकैकरि
 मैंपटुकापचंगलपेटा ॥ आननचारुलसैगिरिधारनराकामयंककलंकज्यौंमेटा ॥
 आनंददायकदेखिवेलायकसोछौजयंतप्रंदरवेटा ॥ १५ ॥ गौरसरूपअनूपमहाअं
 गअंगविराजति सुंदरताई ॥ वारहवाहलिरवर्षीगिरिधारनसोभाकहीनहींजाई ॥
 भूषनहीनकेचमकैषटआननइंदुसमानचुनाई ॥ सोछौविसेसमुभेसमुलच्छन
 देवदलेसगनेसकोभाई ॥ १६ ॥ जयंत ॥ संवैया ॥ मैंजननीग्रहवैठोहुतोतितदूतने

आयहवालउचाह्यो॥ नर्मदातीरभयोअतिसंगरकालनैदानवदेवसंहाह्यो॥ श्रीगिरि
धारनकेपरतापसोंवासववृत्रकोप्राननिकाह्यो॥ जानतताकहंआपअहोसोकहौकि
मितातमहारिपुमाह्यो॥ १७॥ कार्तिकेय॥ सावरज॥ दोहा॥ सुरपतिसुतयहवचनमुनिअ
वरजमोहिविसाल॥ कहानतुमरनमैंरहेजोपृथतहौहाल॥ १८॥ जयंतासवैया॥ जादि
नसोअरिकीभयिभाणिकेत्यागकियोघरमेरेपितानै॥ तादिनसोंजननीनैतज्योसव
धारेहियेगिरिधारनध्यानै॥ सेवनतासुलियोहमप्रीतिसोंसामाप्रसन्नफलादिकआ
नै॥ संगरमैंनहिंसंगरहेकछुतासोंनताकेहवालहिजानै॥ १९॥ कार्तिकेय॥ जववृत्रासु
रकेभयसोंसुरसवभागेतवष्ठीरनिधिकेनिकरजायकैयहकहनलागे॥ छप्पय॥ जैर
मेसपरमेससेससाईसुरेसहरि॥ जैअनंतभगवंतसंतवंदितदानवअरि॥ जैदयाल

न. ना.
५

गोपालप्रनतप्रतिपालगुनाकर॥ जैअनन्यगतिधन्यधरमधुरपंचजन्यधर॥ वंदारकवें
दअनंदकरकृपाकंदसुखपुंदहर॥ हरबंधमनोहररूपधरजैमुकुंददुखदुंददर॥ २०॥ जयं
तसानंद॥ तवतव॥ कार्तिकेय॥ जवदेवतानेनैअसेवीनतीकरीतवआकासवानीभई॥
॥ दोहा॥ सवसुरजाहुदधीचपैमांगहुतिनकोगात॥ तामुअस्थिकोकुलिसरविकरहुच
त्रकोघात॥ २१॥ जयंत॥ सानंद॥ तवतव॥ कार्तिकेय॥ यहमुनिप्रनामकरिसवदेवतादधी
चपैजायहाथजोरिकहनलागे॥ दोहा॥ जयमुनिमंडनधरमधरपरउपकारकर्ज॥ दी
नबंधकरुनासदनसाधहुसुरकोकर्ज॥ २२॥ जयंत॥ तवतव॥ कार्तिकेय॥ असेसवके
वचनमुनिदधीचबोले॥ वरंवै॥ जौमोसोंजांवतसुरसहितसनेह॥ तौमनइच्छितंदे
हौममव्रतएह॥ २३॥ जयंत॥ सानंद॥ तवतव॥ कार्तिकेय॥ असेमुनिकेवचनमुनिप्र

५

सन्नहोय देवता बोले ॥ दोहा ॥ अत्रासुरभयभीतहम मांगतनुमरोगात ॥ वज्रविरचि
कै आस्थिको करि है ता को घात ॥ २४ ॥ जदपि देहवस्त्रमसवहि चहतया सुजग अयेय ॥ त
दपि धामधुराधारन को नहि कछु अहे अयेय ॥ २५ ॥ जयंत ॥ तवतव ॥ कार्त्तिकेय ॥ ऐसे दे
वन के वचन सुनिकै मुनि खिन्न मन होय कै यह बोले ॥ सवैया ॥ देखहु तौ जग जीव की
रीतहि आपुने ही हित सो हित ठानै ॥ देवह भूलि रहे इहि मै तव और की बात कहा कहि
छानै ॥ का करत बनिसे धकहा गिरिधारन को डिन ही पहिचानै ॥ स्वारथ मै मन दोरि
रख्यो परमारथ ता सो अकारथ जानै ॥ २६ ॥ दोहा ॥ निज अरि मारन हेतु तुम अस्थि बह
तम मदेव ॥ कै सो दुख मोहि मारन को सो नहि जानत भेव ॥ २७ ॥ जयंत ॥ चिंता सहित ॥
तवतव ॥ कार्त्तिकेय ॥ तव देवता सब उदास होय कै यह बोले ॥ दोहा ॥ जिमि तु अगात वि

न. ना.

६

नासदुखगुनतनहमनिजस्वार्थ॥ निमिनतुमहुं ममदुखगुनतसमुद्गुहविप्रजथार्थ॥ २८
जयंत॥ तवतव॥ **कार्तिकेय॥** अैसेदेवतानकेवचनसुनि कै मुनिमनमें विचारन लागे॥
सवैया॥ विधिदेहस्त्रीसवकी गढिभूतनहैं जहें जन्मविनास प्रकार॥ जगतीमहें जाहि
जन्योजननीवहजैहैहन्योजमसों व्यवहार॥ गिरिधारनभाति करै समवै यह संसृति
रोगकोहै उपचार॥ श्रुतिचारविचार कियो निरधार अहै उपकार ही जीवनसार॥ २९॥
अैसे सोचि कै दधीच प्रसन्न कै बोलत भए॥ **दोहा॥** सवदेही को देह यह जदपि परम प्रि
य एव॥ तदपि मुदितचितस्यामहिततुम्ह कहें दैं हैं देव॥ ३०॥ **सोरठा॥** इमि कहि मुनि
मति पीन हरि हि ध्याय मंदे दगन॥ भए ब्रह्म में लीन गात पात पुहुमी भयो॥ ३१॥ **जयं**
तानंद॥ तवतव॥ **कार्तिकेय॥** **दोहा॥** तवलै आर अस्थि सुरगावत मुनि गुन गाथ॥

५

विमुकरमावज्जहिविरचिदियोदेवपतिहाथ॥३२॥जयंत॥सानंद॥संवैया॥सोऽधर्मनिधा
नसुजानमहागिरिधारनमैरतिजासुभई॥परकोउपकाररुचैमनमैपरमारथकीवरा
हलई॥पितुमातुहृतारथताकेसदाजिनकेसुतनैजसवेखिवई॥वहधन्यदधीचमुनी
सअहैंजिनअन्यकेकारनदेहदई॥३३॥कार्तिकेय॥सत्यसत्य॥जयंत॥तवतव॥
कार्तिकेय॥संवैया॥ध्यायकेपायरमावकेउरपूजिघनीविधिविप्रसमाजा॥आसिख
लैगुरुदेवकीप्रेमसौमंगलमैवजवायकेवाजा॥रत्नलुटायकेजाचकपैसुभसोधिमु
हूरतआनंदसाजा॥जंगकेकाजउमंगभरोसितरंगमतंगचढ्योसुराजा॥३४॥जयंत॥
सानंद॥तवतव॥कार्तिकेय॥छप्पय॥बलतदेखिसुरपतिहिबलीसुरसैनाभारी॥को
रिनमत्तमतंगतुरगस्यंदनपदचारी॥कहिनजायअतिभीरतीरतरवारचमकै॥पर

न. ना.

७

हरिं वंदुकेतुवीरधरुधरुयहवै॥ जमजलपतिधनददिनेसससिअस्विनिमुतवसु
रुद्रगन॥ सिखिसाध्यजङ्गकिन्नरमरुतचलेसवैवढिकरनरन॥ ३५॥ जयंत॥ तवतव॥
कार्तिकेय॥ श्रुष्य॥ बलतअमरदलप्रवलहृत्योमहिमंडलसवरो॥ भूरिभारसौभरोप
नीपतिकोफनजवरो॥ अर्धूरिअकासनेकुपरकासनदीसे॥ दुसहववंडुचंडपवन
तनकोमनपीसे॥ उच्छलतनीरनिधिनीरवढिधूमभूमिमैभरिगयो॥ चिक्कारचारदि
गाजकरतअतिहलचलथलयलभयो॥ ३६॥ जयंत॥ सानंद॥ तवतव॥ कार्तिकेय॥
दोहा॥ आवतसुनिसुरसैनकोंउत्रवलीअसुरेस॥ सजगहोहसववीरममअसेदियो
निदेस॥ ३७॥ श्रुष्य॥ प्रमुचिनमुचिसतनयनसंकुसिरदिसिरअनर्वा॥ सकुनीहेति
प्रहेतिविप्रचित्रीदृषपर्व॥ अंवरउत्कलकपिलवाजिमुखउल्लससंवर॥ असिलोमा

७

अतिनाभरिसभवल्वलवलवलधर॥इनआदिअनेकनअसुरवरनिजनिजसेनासजि
चले॥तिनकेमधिचत्रासुरलसेजाहिदेखिसुरखलमले॥३८॥जयंत॥तवतव॥कार्तिके
य॥छप्पय॥विकटअसुरकोकटकचल्योसुरकटकनिकटजव॥चलेमतंगउतंगअंग
घनरंगलसैंसव॥ताजीवाजीविविधवरनराजहिंकरिगजी॥रथपथपरष्विदेहिंसस्त्र
पंगतिजिहिंसाजी॥रनधीरपदातीसोहतेभयकरताकोरेवज॥असिपरिघमसुंड़ीणि
रिगदासूलादिकधारेकरन॥३९॥जयंत॥विंतासहिता॥तवतव॥कार्तिकेय॥दोहा॥
तवदुहुंदिसिकेसुभटवठिकरतभएसंग्राम॥तुमुलशब्दसुनियतअवनजासोंलय
घनछाम॥४०॥कवि॥धमकधुकारनकीधौंसनकीधूमघनीढोलनिकीबोलनि
सुनाईदेतिसवैगैर॥वाजैंकरनालैंपरसालैंजेसमरमाहिउंकाकीअवाजअतिसं

न. ना.
८

कै

काकरैदोऊँ और ॥ गिरिधरदास छयाहीधुनितुरही की मालरग्नकनैसी कानन पोरैक
ठोर ॥ घंटाकरै टंटा कंबुवाजै अंबुधर अैसे वस्यो घोर सोर छितिछोर लौं अथोर जोर ॥ ४१ ॥
जयंत ॥ तवतव ॥ कार्तिकेय ॥ दोहा ॥ ताछन ब्रह्मरूपगुनि अचरज सहसुरपाल ॥ निक
ट निरखि धनपाल कौं वोले वचन विसाल ॥ ४२ ॥ कवित ॥ काल सो कएल कारे कर मैं त्रि
सूल लिए अवनि सों अंवर लौं लाग्यो दरसावतो ॥ मानो आपविधि नै विराट की वनाई
माषना तो इतो वडो रूप कहां सों बढावतो ॥ मेरे जानयाही की किरीट कन गूरन सों पूख्यो
ब्रह्म अंड ब्रह्मद्रवजा सों आवतो ॥ और हूँ चातो यहया मैं नही संसै नै कुजो पै अंवर का
सया अकास माहिं पावतो ॥ ४३ ॥ जयंत ॥ साचरज ॥ तवतव ॥ कार्तिकेय ॥ अैसे इंद्र के वच
न सुनि कुवेर बोलत भए ॥ दोहा ॥ अति निसेध सब मैं अहे सां च सुनहु सुरनाथ ॥ यह

८

अनिहीउं चोभयो अवमरि हेतुवहाथ ॥ ४४ ॥ जयंत ॥ तवतव ॥ कार्तिकेय ॥ छप्पय ॥ तवैघोरसं
४५ घौं मच्चोसुर असुर मरुसों ॥ भिरेसमर चौहद सवैधरुमारुदसों ॥ सुलसक्ति असिपद्ग
दासरपरिघठदसों ॥ श्रोनि तसरित प्राग्दुर्भईदुहुं दिसनरुदसों ॥ बहुकवचकुंडकुंडलमुकु
टसिरकरपदकरिकरिगिरे ॥ असुरहितवाजिवारनवली जुड्यली सोहहिंथिरे ॥ ४५ ॥ ज
यंत ॥ सानंद ॥ तवतव ॥ कार्तिकेय ॥ दोहा ॥ तवजमधनदप्रहारसों विमुखमईपरसैन ॥ टेरि
फेरितेहिभिरतमोचत्रासुरसुजौन ॥ ४६ ॥ छप्पय ॥ पकरिपकरिवहुभटनचरनहिध
रनिपटकृत ॥ वहुतनमरदतअंगवहुतधरिवदनगटकृत ॥ वहुतनमूकप्रहारदेतकठि
प्रांसटकृत ॥ वहुतनपोएसूललसतनभलोथलटकृत ॥ जिमिमहामन्नमातंगवर
प्रविसिविनासतवनजवन ॥ निमिटल्योदेवदलआसुहीअत्रावलीविकरालरन ॥ ४७

न. ना.
५

जयंत॥चिंतासहित॥तवतव॥कार्तिकेय॥दोहा॥इमिनिजसेनविनासलखिसहस्रनैन
वलचैन॥वत्रासुरहिप्रचारिकैभिरतभएअरिजैन॥४८॥जयंत॥तवतव॥कार्तिकेय॥
दोहा॥सक्रचापटंकारिकैहनेअनेकनपत्र॥तिन्हिसहतदौरतभयोमहाकालसम
वत्र॥४९॥अप्य॥तवसुरपतिगहिगदादनुजदिसिभएचलावत॥ताहिपकरिकखा
मतजीलखिकैअएवत॥तासौंछैकैविकलभयोगजभूतलआवत॥चेतखोयवल
गोयनुरतगिरिपखोमहावत॥सुरनाथमहासंभ्रमसहितउतरिसमरठाटेभए॥सोल
खिअमरनहाहाकियोउरअतिहीचिंतामए॥५०॥जयंत॥सकंप॥तवतव॥कार्तिकेय॥
दोहा॥तवमातलिलायोसुरथसुंदरअर्वलगाय॥तापरवैठिसुपर्वपतिभिरेवत्रसो
जाय॥५१॥जयंत॥तवतव॥कार्तिकेय॥अडिह्ना॥वत्रासुरसहकोपसूलकारधारिकै॥

धायोसुरपतिऔरघोरललकारिकै॥ सुनासीरनधीरवीरनिहिअंरिकै॥ कुलिसन्यागिस
हसूलदियोभुजकारिकै॥ ५२॥ जयंत॥ सानंद॥ तवतव॥ कार्तिकेय॥ दोहा॥ तवदजेकर
परिघगहिहन्योवासवहिभूमि॥ ताप्रहारसोंहाथसोंकुलिसगिस्पोरनभूमि॥ ५३॥ जयंत॥
चिंतासहित॥ तवतव॥ कार्तिकेय॥ सोरठा॥ लाजसहितसुरराजवज्रठठावननहिंचहे॥
तवहिंदुजसिरताजविहंसिवचनबोलतभयो॥ ५४॥ छप्पय॥ देहकरमन्त्राधीनच
लैति॥ कैअनुसारहि॥ तासोंवरवसजीवलहैसुखदुखसंसारहि॥ औरचाहअनुसरे
काजतहेंऔरहिजोवै॥ कोटिजतनकोउकरोजोनहोनीसोहोवै॥ डैकरतजहांसंग
रतहांइकजीततइकमरतध्रुव॥ यहगुनिबुधइहिविंतनहीअतिअसारव्यवहार
भुव॥ ५५॥ कवित्त॥ जेतेजगभोगजामैंभूलिरहेलोगतेकरहिंसवरोगसोगकैसेकैवता

न. ना.
१०

इयै॥ करम को गेह पंचभूत मई देहना समान गुनि एह नेह काहे कौं वठाइयै॥ गिरिधरदास
कोउ काहू कोन संगी खास करि विसवास रथा त्रास उपजाइयै॥ दार सुत वित्त अहैं सवहि
अनि तता सों गुनि निज हित चित्त स्याम पद लाइयै॥ ५६॥ दोहा॥ ताते तुम भय लाज तजि व
ज उठा बहु हाथ॥ जो भवित वसो होय हे समार करहु मम साथ॥ ५७॥ जयंत॥ सा चरज॥ त
वतव॥ कार्तिकेय॥ दोहा॥ रत्ना सुर के वचन मुनि चकित होय सुराय॥ सत्रु हिवहुत प्रसं
सि कै कहत महत हरयाय॥ ५८॥ सवैया॥ लहिकै यहताम सदान वकोत न जा मैं विवेक न
ने करै॥ मुनि सीवार वात वया नत हो गुनि कै जन जो भवता पद है॥ गिरिधारन भक्ति प्रभा
व महा कहियै किमि जाज सवेद कहै॥ हरि भक्त अनन्य मै गन्य सदानु मरे सम धन्य न
अन्य अहै॥ ५९॥ जयंत॥ तवतव॥ कार्तिकेय॥ दोहा॥ इमि कहि कुलिस उठाइ कै प्रमुदि

१०

नचितसुरनाथ॥परिघसहितअसुरेसकोकाख्यौदूजोहाथ॥६०॥जयंत॥सानंद॥तव
 तव॥कार्त्तिकेय॥दोहा॥तवनिजवदनपसारिकैवत्रासुरअरिकाल॥वाहनसहित
 सुरेसकोलीलगयोविकराल॥६१॥लखिसहसासहसाछकहंनिगलतसमरमेंगार॥
 देवनहाहाकारकियअसुरनजैजैकार॥६२॥जयंत॥वाससंहित॥तवतव॥कार्त्तिकेय
 छप्पय॥असुरदरमेंसुरथसहितबलिगएपुरंदर॥जैसेकोउजायस्यामगिरिकंदरअं
 दर॥रुसकवचपरभावभयोअसुकोअभावनहिं॥कारिकुलिससोंकुच्छिकडेनुरत
 हिताथलमहिं॥जिमिफारिमहातमनिकरकोंनिकरतनभमेंनखतपनि॥तिमिकठ
 तभएअंगसोंसुरपनिवरभटविमलमति॥६३॥जयंत॥सानंद॥तवतव॥कार्त्तिकेय॥
 दोहा॥तवनिजकामेंकुलिसगहिरोससहितसुरनाथ॥कईवरसमेंकारिकैमहिपाख्यौ

अरि

न. ना.
११

अरिमाथ॥६४॥**कविता॥**ब्रह्मासुरधारजवैधरनीमेंआयगिखोथरथरहालेतवैतीनलो
कनवखंड॥मेरेजानस्यामनैअपानीधरिसत्तालायतासोंवचीसखिप्रलैकालनाभयो
प्रचंड॥गिरिधारदासनातोकोनजानैकहाहोतोपायकैप्रहारमहाकालदंडसोअखंड॥
धूरिजातो गजप्राणदूरिजातोकोलरदकूरिजातोसेसफनफूरिजातोब्रह्मअंड॥६५
दोहा॥ब्रह्मासुरकीज्योतिकठिभईव्योममेंलीन॥लखिव्याकुलभागेअसुरसुरनन
गारेदीन॥६६॥**जयंत॥सानंद॥**पापकस्योपापकस्यो॥**दोहा॥**अवमोहिउपजीवि
तमेंपितुपददरसनचाह॥तेकितदेहुवतायमोहिनिर्जरैसनानाह॥६७॥**कार्तिकेय॥**
दोहा॥ब्रह्मासुरकेनासलौहमदेखेअमोस॥अवतिनकोंजानतनहींअहैंकोंनसे
देस॥६८॥**इतनेमेंप्रविश्योमातली॥सवैया॥**गोरोसोगातलसैगिरिधारनदेखिगुला

११

वके फूल लजाही ॥ गंउन पैवने कुंउल लोल जरा ॥ सवै गहने दर साही ॥ अंबर उज्जल सो
हत है ॥ उर मैं सुर नायक भक्ति सदा ही ॥ मातली सो छौ सुरेस को सारथी पातली चावु कले
कर माही ॥ ६९ ॥ दो ॥ उन के पाय परिठाठो भयो ॥ तव ॥ जयंत ॥ दोहा ॥ कहु मातलि अरि मा
रिकै किन राजत सुर राज ॥ मैंतिन को दरसन वहत भयो सिद्ध सब काज ॥ ७० ॥ मातलि ॥
दोहा ॥ बचा सुर को मारिकै डिज हत्या भय पाणि ॥ हमन हिं जानत कौन थलग ए देव पति
भाणि ॥ ७१ ॥ जयंत ॥ उदवेग सहित ॥ दोहा ॥ सत्रुमल्लो हत्या लगी मनु दोहरा नो रोग ॥ अ
वचलितिन को योजिकै हरियै को उविधिसो ग ॥ ७२ ॥ कार्तिकेय मातलि ॥ सत्य सत्य ॥
इमि कहिकै सव नि करे ॥ इति नहुष नाटके प्रथमो दृः ॥ १ ॥ तव प्रविसे ॥ बहस्पति औ
सिख्य ॥ सवैया ॥ कंचन सीरि पै दीपति देह दसोदिसि मैं मुख कांति पसारे ॥ भाल मैं कै

न. ना.
१२

सरपंड विसाल हिये तुलसी दल माल सुधारे ॥ श्री गिरिधारन मैं मन कों दिए विद्या समस्त के
जान न होरे ॥ सो हे ब्रह्मस्पति देवन के गुरु वेद मनो अहे मूरति धारे ॥ १ ॥ उज्जल अंगल से
तषवंत सिख्यो मुनि सों श्रुति पाठ अचूको ॥ नीची निगाह पड़ेम हें चाह मुख ति है जाकी म
धूकरी टूको ॥ पोथी लिए कर मैं गिरिधारन धारे हिए महं ध्यान विभूको ॥ आवत पाछे
ब्रह्मस्पति जके विनीत महा मुखि सिख्य गुरुको ॥ २ ॥ गुरु ॥ दोहा ॥ ब्रह्मा सुरसंगल रहि
तजव सों गए सुरेस ॥ तव सों नहिं पाई खबर तुम कछु सुन्यो संदेस ॥ ३ ॥ सिख्य ॥ दोहा ॥ इ
दानी ने वन्यो हमें गए रहता भौन ॥ देव दत्त कछु तहें कही जानत हैं हम तौन ॥ ४ ॥ गुरु ॥
वरवै ॥ देव दत्त ने तुम्ह सो भाख्यो जौन ॥ मौक हें कहहु हवाल हि विद्या भौन ॥ ५ ॥ सिख्य
वरवै ॥ नाथ आसिया बल को पाय सहाय ॥ ब्रह्मसमर निपात्यो निरजराय ॥ ६ ॥

१२

गुरु॥ दोहा॥ सुरपति असुरहिमारिकै जयपाई भयखोय॥ नहिं आएममपदपरन अचर
ज'उरयह होय॥ सिस्य॥ दोहा॥ मगमहें मोहिमातलि मिल्योतानेक स्यौ हवाल॥ वधिअ
रिहत्याभीतकै भागिगएसुरपाल॥ ८॥ इतनेमैं॥ नेपथ्यमैं॥ महाकलकलभयो॥ तव॥
गुरु॥ कानंदैकै॥ दोहा॥ भारीशब्द सुनातहैं नहिं लखातकष्टएव॥ जानिपरत आवतअ
हैं है उकत्रवहुदेव॥ ९॥ सिस्य॥ दोहा॥ सक्रहिदुजहत्यालगी भागिगयो सहत्रास॥ तासैं
मोहिबुझतहैं आवहिं सुरतुवपास॥ १०॥ तवप्रविसे॥ सूरज चंद्रमा अग्नि कुवेरवरुन
जम॥ सबैया॥ लालसुरूपविसालमहातन अंवरलाललसैष्टविसाली॥ लालकेभूष
नअंगधरेगिरिधारनरूपहरैंतमहाली॥ देखतहीं चकचौंधीकरैं दिननायककीकिर
नैचटकाली॥ पंकजआननपंकजनैनलिकरपंकजपंकजमाली॥ ११॥ उज्ज्वल

न. ना.
१३.

अंगअनूपलसैपटउज्जलराजेमहारुचिकारी॥मोतिनकीउरमालवनीमुखकांतिविरा
जतहैतमहारी॥सीतमयूखनतापहरैंगिरिधारनकेमनअंवारचारी॥सोहेनिसाकरआनं
दआकरलीनेगदाकरमैंअतिभारी॥१२॥कुंदनसोतनरंगलसैअतिलोचनलालरंगोज
नुजावक॥पूखोदिसामैंप्रतापमहाअरिभागैजथाहरिसौंमृगसावक॥अंवरनीलविरा
जतहैगिरिधारनजाहिभजैमुनिभावक॥सोहेअवासअंधेरोविनासकैस्वाहानिवासप्र
कासमैंपावक॥१३॥तननीलोविराजैछवीलोमहामनिकंचनकेवनेभूषनढेर॥पटला
लधरेइमिसोहिरहेजिमिमर्कतसैलगिरारहीघेर॥गिरिधारनकोउरध्यानधरेजिनकां
धनरासिकेकैकसुमेर॥अरिपैसमसेरलिहसमसेरलसेतहंयोंतिहिवेकुवेर॥१४॥गौर
सरूपअनूपमसोभितउज्जलअंवारआनंददायक॥पंकजकीउरमालविसालजवां

१३

हिरभयनदेखिवेलायक॥ हाथमेंपासलिएगिरिधारनसत्रुहनेसुरसिद्धसहायक॥ सोहेम
हावलसुंदरताथलकुंडलनक्रधरेजलनायक॥ १५॥ उतंगलसैतनकज्जलरंगनिहारिकै
कांतिलहैरविलाज॥ लिएकरदंडअखंडप्रकासविराजतज्यौंघनकेकरगाज॥ हिएगिरिधा
रनध्यानधरेजगसिच्छकसत्रुलवापरवाज॥ समाजमेंसोहेसरूपदराजमहागजराज
तथाजमराज॥ १६॥ तवसवननैगुरुकेचरनारविंदनकोवंदनकियो॥ जीवने॥ विरंजीव
यहआसिवादिदियो॥ देवता॥ दोहा॥ स्वामीब्रह्ममारिकैगएपरंदरभागि॥ नहिंसुधिति
नकीमिलतिहैहमआएइहिलागि॥ १७॥ गुरु॥ दोहा॥ जादिनसोंहमसमरमेंविदाकिए
सुरराज॥ तादिनसोंतपहितगएआएवनसोंआज॥ १८॥ हमनहिंजानतहालकछुकि
तहैंसुरपतिएव॥ छपेहोयोंपैकहूंहत्याभयसोंदेव॥ १९॥ इतनेमेंप्रविश्योजयंत॥

न. ना.
१४

गुरुकों प्रनाम कियो ॥ गुरु ॥ दोहा ॥ तुम जयंत जानत अहौ जनक अहैं केहि ठाम ॥ सुनी होय
जौं खवर तौ कहौ मोहि मति धाम ॥ २० ॥ जयंत ॥ दोहा ॥ सुरपति भाग न हाल मोहि मातलिक
स्यौ बुझाय ॥ मैं तिन कौं दूठन गयो आयो पतोल गाय ॥ २१ ॥ गुरु देवता सहित ॥ दोहा ॥ क
हौ कहौ सुरराज की तुम सुधि पाई कुत्र ॥ पिता खवर क्यों लेइ नहिं जौं घर होइ सुपत्र ॥ २२ ॥
जयंत ॥ छप्पय ॥ मैं पितु दूठन काज भूम्यो भुवमंडल सारो ॥ सरप लोक सुरलोक कहैं न
हिं तिन्है निहारो ॥ इमि विचारत सब ठौर हिये अति चिंता वाढी ॥ तव हिं मान सरनिकट ल
खी दुज हन्या ठाढी ॥ एस मुहि प्रविसि की लाल मैं हेरन लाग्यो कमल प्रति ॥ इक वडे नलि
न की नाल मैं लखे बुकाने नाक पति ॥ २३ ॥ दोहा ॥ या विधिवरन्यो आपसों अमर ईस
को भेव ॥ करुना करि अवसोक रहहु जो करत वगुरु देव ॥ २४ ॥ गुरु ॥ दोहा ॥ जव लौं छंटेन

सककीहत्याकरिउपचार॥तवलौंवाहिअराजपैंथापनकोउसरदार॥२५॥जयंत॥चिंता
सहित॥दोहा॥तुमसरवग्यप्रवीनगुरुतुमसौंवठिनहिंकोय॥जानतभूतभविष्यसवकह
हुउचितजौहोय॥२६॥गुरु॥दोहा॥हैंमहिनिमनिवंसमनिनहुसनामनराय॥देवराज
तिनकहैंकरहुजवलौंअघनहिंजाय॥२७॥जयंत॥चिंतासहित॥दोहा॥मैंवालकसर
वग्यतुमअनुचितकहिवोसोय॥तदपिकहतकरिठीठतानरकिमिनिर्जरहोय॥२८॥
गुरु॥दोहा॥सवदेहनकीआदियहमनुजदेहहेतात॥पसुपच्छीसुरअसुरवपुयाहीसोंकै
जात॥२९॥जयंत॥साचरज॥दोहा॥सुनियतकर्मप्रधानसवदेहलहतहैंजीव॥तौनर
देहहिमुख्यकिमिआपकहतबुधिसीव॥३०॥गुरु॥अप्य॥सवतनकरमप्रधानजगत
सुनियैअरुकहियै॥कहाकरमकोरूपप्रथमयहजाननचहियै॥जथाखेतमेंबीजकठ

न. ना.
१५

तवद्विधिजेडारे॥ अनतदेहिं फलतौ नहरषडुखकरिवेवारे॥ निमिमनुजदेहकेदारेहेकर
महोहिंउतपन्नदूत॥ प्रनिविधिसौलैंकैमसकलौंदेहलहतनिजगुनसहित॥ ३१॥ जयं
त॥ दोहा॥ नरतनकर्मप्रधानहेहमजान्योयहेहेत॥ जीवचेतनहिंजडकरमकहियैकिमि
फलदेत॥ ३२॥ गुरु॥ दोहा॥ ईसनियंताऔरहेजाकीआज्ञाकर्म॥ चलतएतविपरीतपथ
सोफलप्रदयहमर्म॥ ३३॥ जयंत॥ दोहा॥ तवप्रतापसवभमगयोजान्योसंस्ततिमेव॥
श्रमाकरहुअपराधममकृपासिंधुगुरुदेव॥ ३४॥ गुरु॥ दोहा॥ नहुसविनादूजोनहीजोहो
वैसुरकांत॥ तासौंदूतपठायकैकहवावहुचत्तांत॥ ३५॥ सूरज॥ हाथजोरिकै॥ छप्पय॥ ज
दपिसकलतनआदिमनुजतनश्रुतिकियगिनती॥ तदपिवुद्धिअनुसारकरतगुरुहमक
छुविनती॥ नरतनकरिकैकर्मजीवजोजोतनपावै॥ तहंतहंकोव्यवहारकोरैअरुसवहि

१५

मुलावै॥ करि पुन्य अमर जव होत है दिव्य भोग तव ही लहत॥ यह नर तन मैं सुर राज कौं कि
मि करि है संसय महत॥ ३६॥ गुरु॥ छप्पय॥ रवि ससिवंसी भूप सदा इंद्रासन राजत॥ सम ड
न को व्यवहार सुजसति हुं परम हें ध्या जत॥ जव हि इंद्र पर भीर परत न्य प होत सहायक॥ पूर्व क
कुस्थ हि कंध थापिलिय जय सुर नायक॥ यह नहु सनाम नर मुकुट मनि नीत विचच्छन
विमल मति॥ नख ते सवंस अ वतं से है इंद्रासन के जोग अति॥ ३७॥ चंद्रमा॥ हाथ जोरि कै
छप्पय॥ आप कही सो सांवनु ल्ये हैं सुर पति नर पति॥ बैठत आसन संग करत संगार स
हाय अति॥ होत एक संदेह कहहु गुरु जिमि भ्रम जावै॥ देव देह विन मनु ज इंद्र पद वी किमि
पावै॥ संग खान पान वैठ कस वै जद पि देव नर की अं है॥ पै पथ क कर्म अधिकार किय सो
कि मिता तन विनु लं है॥ ३८॥ गुरु॥ छप्पय॥ देव योनि नर योनि करम वस जानहु भाई॥ क

न. ना.
१६

मवेदअनुसारअहेयहरीतसदाई॥श्रुतिमहंसवसामर्थकाजमनइच्छितसाधे॥सोपा
वैजोचाहिसुविधिकरिकेआरोधे॥नरतनश्रुतिमंत्रप्रभावसोंभईचंद्रभागाअमर॥हम
ताविधिराजानहुसकोंथापहिंजेसुरराजपर॥३९॥अग्नि॥विनयसहित॥अप्यय॥
आपसकलसामर्थकरहुजोइच्छाहोई॥गुरुकोगुरुकोउनाहिंकैवकवादहिजोई॥
पैहमवरनतकष्टकताहिकरुनाकरिसुनियै॥अनिसोकरियैनाथउचितवितमैंजोगु
नियै॥श्रुतिमंत्रनसोंसुरराजकीहत्यासकलछुडाइये॥तिनहींकंहं दीजैराजयहऔ
रहिकोंवैठाइये॥४०॥गुरु॥अप्यय॥तुमअैसेमतकरहुअग्निसख्यकहावत॥सक
लसमयकेमाहिसीघृताकामनआवत॥जौनकालमैंहोयजौनभवितवसोइहोई॥वि
धिनिर्मितव्यवहारटारितिहिसकैनकोई॥याकालनहुसनरपालहीइंद्रासनकेजो

१६

गहै॥ नहिं आयसकतवासवअवहिंजवलौंअघकोभोगहै॥४१॥ कुवेर॥ नीचोसिरकरि
कै॥ छप्पय॥ जदपिआपगुरुकहतनपहिवैठनइंद्रासन॥ तदपिहोतहैछोभनहीरुवि
करतमोरमन॥ देवसदानरपूजनीययहवेदवखानत॥ मनुजहोयसुरपूजनीयकिमि
सतपहिचानत॥ हमआदिलोकपतिसवनकोनहुसहोयहैमुकुरनग॥ विपरीतरीत
कैसेचलैकहाकहैंगेजीवजग॥४२॥ गुरु॥ भटकुटीचढायकै॥ छप्पय॥ अमुकजीव
सुरराजहोययहनिरनयनाही॥ सवहिकर्मअनुसारमसकसुरपतिकैजाही॥ होतम
सकजवतवहिंभमतकोउगनतननेको॥ सोईहोतजवइंद्रतवैतुमसुरसिरटेको॥ जा
कालजीवजोहोतहैकरतकामतैसोउचित॥ जवनहुसनाकपतिहोयहैंसवहिनवैहैं
सीसतित॥४३॥ वरुन॥ विनयसहित॥ छप्पय॥ एकवातहमकहतकृपाकरितेहिसुनि

न. ना.
१७

लीजै॥पनिभविस्वजो होय सोईगुरुआय सुदीजै॥जदपिन छोटेन्ह उचित वउन सोंकर
नठिठाई॥तदपि कहत हों नाथ दयानिधि जानि सदाई॥जब लौं नहिं आवत इंद्र उत तव
लौं यह मत कीजियै॥सुरराज कुमार जयंत कहें जनक आसनहिं दीजियै॥४४॥गुरु॥अप्ये
जो तुम वरनत वरुन पेरे हेता महं भारी॥नहिं जयंत है सकत इंद्र आसन अधिकारी॥यह
बालक निरधार बुद्धि पितु सी किमि पावै॥महादुरद को भारवा लगज नाहिं उठावै॥जो
होत जोग जिहिका मंके सोता ही सोंवनि परत॥जो विनु विचार कछु अनुसरत सो पाछे
चिंता धरत॥४५॥जम॥हाथ जोरि कै॥अप्य॥तुव प्रताप वल सत्करत सुरराज हि आ
रज॥विनु तु अकृपा कटाखु सधत नहिं एक हुकार ज॥जौं जयंत पै आपलेहु सुरपति के
कामहिं॥साधि सकत तौ राजन हीं कछु संसय या महिं॥तुम समरथ सब ही करि सकत

है का वात विसाल यह ॥ जासी सतिलक निज कर करहु सोई करै सुचिरीत सह ॥ ४६ ॥ गुरु ॥
अप्यय ॥ धर्म अधर्म विवेक वंत तु म सम को उनाही ॥ जे जन जग जो करहिं तिन्हिं फल
देत सदा ही ॥ विना जन क के कहै सुतहि पितु राज ॥ जोग नहिं ॥ बहुरि पथ क अधिक
कार ताहि को करै स्वर्ग महिं ॥ यह सुर पति नर पति सम अहैं मित्र काज मित्र हि करत ॥
सुर एज जोग विन नहु सके और को ॥ नहिं लखि परत ॥ ४७ ॥ सव देवता ॥ विनय सहि
त ॥ अप्यय ॥ हम सव तु च आधीन चलत जो अज्ञा पावत ॥ जि मिल करी की नारि न च
ति नट जथान चावत ॥ यह बहु विनती करी जाहि जैसी उर भाई ॥ भूमि यै सो अपराधु
साधु चित सुर सुख दाई ॥ जो विरचि मरदा मय सकत मथा पहुतौ सोइ कै सकत ॥ ताही
के पद पूजै अमर इंदु आप आय सु फकत ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ अव जो करत व होय सोहु कुम

न. ना.
१८

करहुगुरुदेव॥ जाविधिगजानहुसकौं कस्यो जाययहमेव॥ ४९॥ गुरु॥ दोहा॥ देवदूतचित्रां
गदहिपठवहुनरपतिपास॥ ममअज्ञातिनसों कहै इंद्रभएतुमखास॥ ५०॥ तव प्रविश्यो
चित्रांगद॥ सवैया॥ धनंजयके समदेहकी दीपति उज्जलअंगलसै अघधूत॥ विचछ
नवातनमैं गिरिधारनहीमैं थिरै चतुराईवहत॥ धोरेतनअंवरकंचनके गहिनालसैं
मोलके माहिं अकूत॥ लस्यो मतिपूतमहामजवूत सुहावन सो प्रहृतकोदूत॥ ५१
सवनके पाय परिहाथ जोरिगुरुके सनमुखठाठोभयो॥ चित्रांगद॥ दोहा॥ जो अज्ञामो
हि दीजियै करुना करि भगवान॥ सोहम करि हैं सीस धरितु ममम पूज्य महान॥ ५२॥
गुरु॥ दोहा॥ मनुज लोक रूपनहु सठिग जाय कहहु ब्रजांत॥ गुरुअज्ञासों तुमभएना
कलोकके कांत॥ ५३॥ चित्रांगद॥ जो आज्ञा ~~मैं सकहि~~ निकस्यो॥ फेरि प्रविशिके॥ चित्रां

गद॥ दोहा॥ प्रमुखा ज्ञाननुसारहमगएनहुसआगार॥ गुरुतुमकहंसुरपतिवियोवरन्ये
यहनिरधार॥ ५४॥ गुरु॥ दोहा॥ कैसोएजानहुसेहेएजकरतकिहिभाउ॥ किमितासोंवा
तेंभईसोसवमोहिवताउ॥ ५५॥ चित्रांगद॥ दोहा॥ प्रथमगयोमैंद्वारपरदेख्योतहंको
साज॥ स्वर्गद्वारसोछविभरोकहतलहतमति लाज॥ ५६॥ कवि॥ रूमैंखरेदुरददिमा
कदारदीहदेहसुरथषवीलेशत्रयाजनछजेछजे॥ विविधवरनवाजिवीरनकेचंद
वनेजिन्हैजोहिदुरैंसत्रसस्त्रनतजेतजे॥ गिरिधरदासवाजैंदुंदुभीदमामेघनेसुनि
सुनिसद्वद्वफिरतमजेमजे॥ भूमिभरतारकोअगारद्वारसोंहैजहांठाठेचोपदा
रसरदारसेसजेसजे॥ ५७॥ दोहा॥ राजद्वारनराजकोभरोभीरसोंभूरि॥ मैतहंकीसो
भालखतरखौभरमसोंपूरि॥ ५८॥ गुरु॥ तवतव॥ चित्रांगद॥ दोहा॥ तवैशरीवरंदार

न. ना.
१६

सौं हम वरन्यो समुहाय ॥ देवदत्त आयो अहेक रह भूपसौं जाय ॥ ५९ ॥ गुरु ॥ तव तव ॥ वि
त्रांगद ॥ दोहा ॥ चोपदार भीतर गयो पलखो पायनि देस ॥ तव हम ताके संग बै न्य पर
ह कियो प्रवेस ॥ ६० ॥ गुरु ॥ तव तव ॥ चित्रांगद ॥ दोहा ॥ अपर इंद्र समनहु सन्य पजाहि
रजगत प्रताप ॥ सिंहासन ऊपर लख्यो दुति धरजि मिरवि आप ॥ ६१ ॥ कवित्त ॥ अखि
ल अवनि वक्र सासन फिरत जाको जै सेना कलोक पाक सासन सुरेस को ॥ परम प्र
तापदा पथापतीन परमधि सुखी सब प्रजाने कुलै सना कलेस को ॥ गिरिधर दास
जम सम दुष्ट दंड दैन दुस मन दुरोहैं करि कै कुभेस को ॥ जै ते देस देसन के अधिप वि
सेसवल धरतनि देस सीसनहु सनोरेस को ॥ ६२ ॥ गुरु ॥ सानंद ॥ तव तव ॥ चित्रांगद ॥
दोहा ॥ तव हम नतिकरि जोरि कर जय जय शब्द सुनाय ॥ तव आजान्य पसौं कही आप

१६

भए सुरराय ॥ ६३ ॥ गुरु ॥ तव तव ॥ चित्रांगद ॥ दोहा ॥ नरपति तुमहि प्रनाम करि बोले असे
वैन ॥ गुरु आय सुमोसी सपर करि हैं संसये है न ॥ ६४ ॥ छप्पय ॥ जदपित्यागि निज राज
मोहि सुरराजन भावत ॥ तदपि करौं गो अवसिवचन गुरु के उर ध्यावत ॥ पै मम विनती
एक कहहु मुनि राजहि जाई ॥ जामैं संसय त्यागि करौं यह नाकर जाई ॥ सुचि यौन पान
वाहन विपिन जो समाज सुरराज को ॥ सो मिलै मोहि दिवपति भए तौ मैं साधों काज
को ॥ ६५ ॥ जौं यामैं कंछु कसर होय पहिले कहि दीजै ॥ तव मैं करि हौं राज समुझि जिहि
वात न छीजै ॥ मोहि कमती कछु नाहिं होइ सुनि जो मन लट्ट ॥ करौं मंजूरी जाय जथा
भाउ कोट्ट ॥ जव सब अधिकार सुरेस को स्वर्ग लोक मैं पाय हौं ॥ तव त्यागि आपुने
राज कहें इंद्रासन पर जाय हौं ॥ ६६ ॥ दोहा ॥ यह मम विनती गुरहि कहु चित्रांगद समु

न. ना.
२०

जाय ॥ जो आया सुख वारै तव है हौं सुराय ॥ ६७ ॥ **ऐसे चित्रांगद के वचन सुनिकै ॥ स**
वदेव ॥ साचरज परस पर देखिकै ॥ दोहा ॥ सुरदुल्लभ सुरपति पद हितु छगुन तम नमा
हिं ॥ अहो तेज वल नहु सको कह न जोग है नाहिं ॥ ६८ ॥ **तव ॥ गुरु ॥ दोहा ॥** जाय कहौ न प
नहु सों इमि वारन्यो गुरु देव ॥ जव हम तोहि सुरपति कियो दियो साज सव एव ॥ ६९ ॥ **चित्रां**
गद ॥ जो आजा ॥ ऐसे कहि वाहर निकस्यो ॥ फेरि प्रविसि प्रनाम करिकै ॥ चित्रांगद ॥ दो
हा ॥ तव अज्ञानहु सहि कहि लेहु राज सह साज ॥ मेरे वचन हिं अव न करि मुदित भए न
राज ॥ ७० ॥ **गुरु पद पदुम प्रनाम करि कह्यो वचन सानंद ॥ स्वर्ग वैठि अव मुदित हम**
पालहिं गोसुर बंद ॥ ७१ ॥ गुरु ॥ पाप कह्यो पाप कह्यो ॥ देवता ॥ दोहा ॥ स्वर्ग राज नरा राज नै
की नो अंगीकार ॥ कहि अतिलक अव कौन दिन कहा चहि असंभार ॥ ७२ ॥ **गुरु ॥ दोहा ॥**

२०

कालतिलकनूपनहुसकोंकरिहैंसुरपरमाहिं॥सजहुएजकेसाजकीजेसामगनीआहिं
७३॥देवता॥जोआज्ञा॥इमिकहिकैसवनिकरे॥इतिनहुसनाटकेद्वितीयोंकः॥२॥तव
प्रविसे॥सूरचंद्रअग्नि कुवेरवरुनजमजयंत॥चित्रांगद॥तवसवपरस्परदेखिकै॥दोहा
आजनहुसकोराजहैवसून्योगुरुमहराज॥मंगलसाजहिसाजियैसिद्धहोयजिमिका
ज॥१॥जयंत॥छप्पय॥चित्रांगददुतजायविश्वकर्माकहैलावहु॥कार्तिकेयसोंकह
हुदेवगनलैइतआवहु॥मंत्रीकंचनवरनपासविरतांतबखानहु॥तुमचलिआसुहि
सजहुएजसाजहिसवजानहु॥अरुमागधवंदीसूतगनअपसरगंधारवनसहित॥य
हसजिसमाजआवैसुघरअमरराजकेराजहित॥२॥चित्रांगद॥कुमारजोआज्ञा॥
इमिकहिकै॥निकलौ॥फेरिप्रविसिकै॥चित्रांगद॥दोहा॥सुनहुपाकसासनसु

न. ना.
२१

वनतुमकियसासनजोन॥ सोहमनेसवसोंकस्योआवहितैयाभौन॥३॥३तनेमैंप्रविस्यो
विश्वकर्मा॥सवैया॥गातगुलावकेपूलसोंसुंदरखगकस्योकटिपीठपैंचर्मा॥अंवरपी
तधरेणीरिधारनबुद्धिविचछननियअभर्मा॥जानतकारीगरीसगरीष्टहआयुधआ
दिकवस्तुकोमर्मा॥कंचनकोगजहाथलिएपरमाधरूपलस्यौविसुकर्मा॥४॥जयं
तकोप्रनामकियो॥विश्वकर्मा॥वरवै॥जोमोहिअज्ञादीजेसत्रकुमार॥सजहुंतुल
सोसाजहिंनहिंकछुवार॥५॥जयंत॥दोहा॥राजधामसाजहुसंवैजथाजोगअनिवार॥
आजराजिहैंराजपैंनहुसभूमिभरतार॥६॥विश्वकर्मा॥जोआज्ञा॥तैसोसवसाज
सजिकै॥विश्वकर्मा॥ष्यपय॥तुअज्ञाअनुसारराजमंदिरकहेंसाज्यो॥जगमगन
गअनिसुभगतेजलखिजगतमभाज्यो॥केकीकीरकपोतहंसकोवित्रवनायो॥सुंद

२१

रफरसफराक कियो पय फेन सुहायो ॥ मधि धर्यौ इंद आसन रुचिर जथा जोग आसन स
वै ॥ इमि करि ठाम भूषित परम कहा कहत मो कहें अवै ॥ ७ ॥ जयंत ॥ दोहा ॥ जवलौ नहुसन
रेस को निल कहो इन्हिं आज ॥ तवलौ नुम इत ही रहो देखु राज समाज ॥ ८ ॥ विश्व कर्मा ॥
कुमार जो आजा ॥ तव प्रविसे देवतन सहित कार्तिकेय ॥ जयंत नै ॥ ठि कै कंठ लगायो
पास वैठायो ॥ जयंत ॥ दोहा ॥ देवराज के राज पै वैठै मानव राज ॥ यह अज्ञा गुरु नै करील
खहु तात सो साज ॥ ९ ॥ कार्तिकेय ॥ दोहा ॥ जानि परत अनुचित जद पि न्यपहिना कप
दस्वाद ॥ तदपि समुग्नि गुरु नै कही मोहि नहिं हाय विषाद ॥ १० ॥ जयंत ॥ देवता सहित ॥
सत्य सत्य ॥ तव प्रविश्यो राज सामग्री सजि कै कंचन वारन मंत्री ॥ कविता ॥ कुंडल करन
सो है किरिन कलित चारु कंगन करन लसै सुख मा करन है ॥ निमिर हरन वने तन आ

न. ना.
२२.

भारनघनेअमरनहितजाकोसुखदपरनेहै॥ गिरिधरदासनीतधरनविनीतवरसुद्धआ
चरनसुचिसुमतिसरनेहै॥ वरुतवरनराजकारजवरनजानैकंचनवरनलसोकंचनव
रनेहै॥ ११॥ जयंतकोंप्रनामकियो॥ कंचनवरन॥ कविता॥ लावादधिद्वपूगीफलना
रिकैलधानकंचनकलसृष्टालाम्गाम्गराजकी॥ पंचामृतपंचरत्नपंचमेवापंचफ
लपञ्चवनवलपंचपादपसमाजकी॥ गिरिधरदासछत्रचामरविजनसूरमुखीमुर
छलधुजाधौलगजराजकी॥ साज्योसवरजसाजनिरजराजकाजअवैमोहिहो
तिकहाअज्ञामहराजकी॥ १२॥ जयंत॥ दोहा॥ दैहैंगुरुमहराजजूआजुनहुसकौंए
ज॥ तुमइतहीरहिकैलखहुजवलौंहोयनकाज॥ १३॥ कंचनवरन॥ जोआज्ञा॥ तवस
वदेवता॥ दोहा॥ अवजयंतगुरुदेवकहेंचहिचबुलावनअत्र॥ हुकुमकरैंसोकीजि

२२.

येफिरै नहुस सिरधत्र ॥ १४ ॥ जयंत ॥ दोहा ॥ हमहिं जात गुरु के निकट आवत तिन्ह हिल
वाय ॥ आपस वै इत ही रहहु मंगल साज सजाय ॥ १५ ॥ इमि कहि निकल्यो ॥ तव प्रविसे
गुरु ॥ सवन नै उठि कै प्रनाम कियो ॥ तव गुरु ने आसिरवाद दियो ॥ अपने आसन जाय
बैठे ॥ देवता ॥ दोहा ॥ तुव अज्ञा अनुसार सव सज्यो राज को साज ॥ अव कहिये करत व्य
जो ताहि करै महराज ॥ १६ ॥ गुरु ॥ गाहा ॥ हम जयंत कहें पठ्यो विप्रनिमंत्रन काज ॥ सो
होय लै आवत तिन्ह कहें तव हिं गोरज ॥ १७ ॥ इमि कहि वित्रांगद कों पास बुलाय कै ॥ गुरु ॥
दोहा ॥ तुम वित्रांगद नहुस कों लावहु इहां बुलाय ॥ विजय मुह रत आवतो आसु होहिं सु
राय ॥ १८ ॥ वित्रांगद ॥ भगवान जो आजा ॥ इमि कहि निकल्यो ॥ तव प्रविस्थो जयंत ॥
ब्राह्मन सहित ॥ दोहा ॥ तब तन कस मुख तेज अति बुद्धि प्रभाव अमंद ॥ जुगल वसन उ

न. ना.
२३

पवीतधर सो हे ब्राह्मन चंद ॥ १९ ॥ तव जयंत ॥ गुरु कों प्रनाम करि कै ॥ दोहा ॥ जिन्ह हिं वु
लावन तुम कह्यौ मैं तिन के ठिग जाय ॥ दियो निमंत्रन चरन पर लायो संग लिवाय ॥ तव
गुरु नै सवन कों जथा जोग आसन वै ठायो ॥ इतने मैं प्रविश्यौ चित्रांगद ॥ गुरु कों प्रना
म करि कै ॥ चित्रांगद ॥ दोहा ॥ भूमि लोक मैं जाय हम वर न्यो आपुनि देस ॥ दै निज राज
कुमार कहें आवत अवहिं न रेस ॥ २१ ॥ गुरु ॥ खरोरहु ॥ इतने मैं ॥ ने पथ्य मैं ॥ महा कल
कल भयो ॥ सो सवै कानं टै कै सुनिवेलगे ॥ तव गुरु ॥ सानंद ॥ दोहा ॥ सुनियत उंका को
सवद नुरही ओकरना ल ॥ जानि परत अव आसुही आवत नहु समुआल ॥ २२ ॥ त
व प्रविश्यौ राजानहुस ॥ सवैया ॥ हाटक सीदम कै दुति देह की हीरन के हिय हार सुहा
ए ॥ जामास पेद विराजिरह्यौ विविहाथन मैं धनुवान वसाए ॥ ध्यावही गिरिधारन
त

२३

केपदसत्रपनेकोगरुवठाए॥ सोछौनरेससुभेसगुनाकरतेजविसेसदिनेसलजाए॥
२३॥ दोहा॥ गरुपदपदमहिंपरसिकैससिकहंसीसनवाय॥ हाथ जोरिवैठो निकरजी
बहुकुमकोंपाय॥ २४॥ गुरु॥ अडिछत्र॥ दुजहत्याकेत्रासष्टप्यौसुरराजहे॥ ताविनखाली
राजमहानअकाजहे॥ तातैंहमतोहिदेतजोगपहिचानिकै॥ होहुसत्रसहसाजधर्म
मतिठानिकै॥ २५॥ नहुस॥ दोहा॥ जोआज्ञामोहिकरतप्रभुकरिहौसिधरिएव॥ मैतौ
कोउलायकनहींसवसमरथगुरुदेव॥ २६॥ गुरु॥ दोहा॥ जौंसुधर्मपथदेखिकैकरिहो
सुरप्रराज॥ तौरहिहौकंठकरहितसहितसवैसुखसाज॥ २७॥ नहुस॥ सत्यसत्य॥ त
वकंचनवरनकोबुलायकै॥ गुरु॥ दोहा॥ सजहुसाजसवराजकोचारुचौकमहंलाय॥
हमहुंचलतविप्रनसहितनहुसहिसंगलिवाय॥ २८॥ कंचनवरन॥ जोआज्ञा॥ तैसे

न. ना.
२४

सवसाजसजिकैगुरुके निकट आय हाथ जोरि कै॥ कंचन वरन॥ दोहा॥ सवसामग्री सि
द्ध है राज चौक के माहिं॥ अवन्त पविप्रन संग लै चलिये नाथ तहाहिं॥ २९॥ तव गुरु राजा
और ब्राह्मन न को संग लै कै तहां जाय कुसासन पर वैठे॥ गुरु॥ दोहा॥ सुमिरन करहु ग
नेस को नहु सहृदय के वीच॥ हम आवाहन करत हैं आवत अवहिं नगीच॥ ३०॥ नहु स॥
जो आजा॥ इमि कहि ध्यान करि वेल ग्यो॥ तव गुरु ने मंत्र पढि कै आवाहन कियो॥ इतने
में प्रविसे गनेस॥ सवैया सो हे विनायक विघ्न के नायक वारन आनन रूप रसाला॥
चार भुजा में धरे गिरिधारन मोदक पुस्तक अंकुस माला॥ मानिक सोत नरंग उतंग
लसै रद एक प्रकास विसाला॥ मानो रजोगुन पर्वत माहिं सतौ गुन को कस्यो अंकुर आ
ला॥ ३१॥ दोहा॥ तव गनेस पूजन कियो प्रमुदित होय नरेस॥ दुजन स्वस्ति वाचन

२४

पढ्यौ दछिनाटई विसेस ॥ ३२ ॥ तव कलस थापन करि कै ता के जल सों राजा को अभिसे
क कियो ॥ दोहा ॥ मंत्र पाठ सों गुरु जे वै कियो भूप अभिसेक ॥ वढ्यौ चौगुनो तेज मुख ॥ ३
मैं नीति विवेक ॥ ३३ ॥ तव गुरु अज्ञा पाय के नहु समूप हरयाय ॥ इन्द्रासन वै ठत भए इं
द्र सरिस घविषाय ॥ ३४ ॥ तव गुरु नै राज तिलक कियो ॥ हरि गीती ॥ गुरु नै तिलक जव
कियो तव जै जै अमार वरन त भए ॥ कुसुमन करि वार्या परम लखि नृप दुखदुरि गए ॥
बहु वजे दुंदुभि डोल चंग मर दंग ता छन नाक मैं ॥ दैदान दीन न देव पति दारि दमिला
यो रवाक मैं ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ नाछिन निज निज में टलै आए सगरे देव ॥ पथक पथक
देव लगे वाढ्यौ हरख अमेव ॥ ३६ ॥ तव प्रविश्यो सुदरसन चो पदार ॥ कविता ॥ गोरोस
वगात दरसात प्रभाकं वन सीस सिके समान वन्यो वदन विभा अपार ॥ अंवर अनूप ध

हिसव

न. ना.
२५

रेजातरूपरूपसो रतनके भूषन विराजै तारा अनुहार ॥ गिरिधरदाससीससो हतकिरी
टचारु काननमें कुंडलचमकिरेहिसाचार ॥ हीरनसौं जरी कौंति मरी छरी लीने लसो सु
खमा अगार सो सुदरसन चो पदार ॥ ३७ ॥ राजा कों प्रनाम करि ठाढो होय सवन को जुहा
रकरा इवे लग्यो ॥ तव सूरज आपुनी में टलै कै ठाढे भए ॥ सुदरसन ॥ दोहा ॥ सूरकांति व
रमनिलिए ठाढे यह कर जोर ॥ महाराज सुरमुकुटमनिलखहु दिवसमनि ओर ॥ ३८ ॥
राजा नै में टलीनी ॥ तव चंद्रमा में टलै कै ठाढे भए ॥ सुदरसन ॥ दोहा ॥ ठाढे लै ससिकां
तिमनि होरै जौनतमघोर ॥ महाराज सुरमुकुटमनि निरखहु निसिकार ओर ॥ ३९ ॥ राजा
नै में टलीनी ॥ तव आग्नि में टलै कै ठाढे भए ॥ सुदरसन ॥ दोहा ॥ यह ठाढे निजकरलि
एकंवन रतन अथोर ॥ महाराज सुरमुकुटमनि पेखहु पावक ओर ॥ ४० ॥ राजा नै में टली

२५

नी॥ तव कुवेर भेंट लै कै ठाढे भए॥ सुदरसन॥ दोहा॥ यह ठाढे लै भेंट हित बहु धन लन करो
र॥ महाराज सुरमुकुट मनि देखु धन पति ओर॥ एजानै भेंट लीनी॥ तव वरुन भेंट लै कै
ठाढे भए॥ सुदरसन॥ दोहा॥ मुकता आदिक रतन बहु लिए लखत मुख तोर॥ महाराज
सुरमुकुट मनि निरखहु जल पति ओर॥ ४२॥ एजानै भेंट लीनी॥ तव जम भेंट लै कै ठा
ढे भए॥ सुदरसन॥ दोहा॥ यह ठाढे कर भेंट लै लोक पाल सह जोर॥ महाराज सुरमुकुट
मनि अवलोकहु जम ओर॥ ४३॥ एजानै भेंट लीनी॥ तव कार्तिकेय भेंट लै कै ठाढे भए॥
सुदरसन॥ दोहा॥ यह निज भेंट हिलै खरे समर सत्रुवल चोर॥ महाराज सुरमुकुट मनि
देखु दुल पति ओर॥ ४४॥ एजानै भेंट लीनी॥ तव जयंत भेंट लै कै ठाढो भयो॥ सुदर
सन॥ दोहा॥ कर जोरे वर भेंट लै खरे प्रवीन कि सोर॥ महाराज सुरमुकुट मनि लखहु स

न. ना.
२६

क. सुत ओर ॥ ४५ ॥ राजाने भेंट लीनी ॥ तव कंचन वरन मंत्री भेंट लै कै ठाढो भयो ॥ सुदर
सन ॥ दोहा ॥ भेंट लिए कंचन वरन लखत नैन की कोर ॥ महाराज सुरमुकुट मनि निर
खहु मंत्री ओर ॥ ४६ ॥ राजाने भेंट लीनी ॥ तव विश्वकर मा भेंट लै कै ठाढो भयो ॥ सुदर
सन ॥ दोहा ॥ यह ठाढे असि अ सनि लै दारन सत्रु कठोर ॥ महाराज सुरमुकुट मनि
देखहु त्वष्टा ओर ॥ ४७ ॥ राजाने भेंट लीनी ॥ इमि सवन सों पूजित है कै ॥ नहु स ॥ सा
नंद ॥ आत्मगत ॥ दोहा ॥ अहो धन्य कृत कृत्य हम जो याही नर देह ॥ विन प्रयास दि
वपति भए पूजहिं सुरस वर देह ॥ ४८ ॥ तव गुरु कों प्रनाम करि कै ॥ प्रकास ॥ दोहा ॥ प्र
भुपद पदुम प्रताप वलक हि न सक ति है वाक ॥ नाक पाक सासन कियो मो सो मनु
ज वराक ॥ ४९ ॥ गुरु ॥ सानंद ॥ साधु साधु ॥ इतने मैं प्रविसे सत मागध वंदी ॥ संवैया ॥

२६

मनोहरपागरीसीसपैवांधिकसेकरिमैंपटुकामजवूत ॥ लिएकरपुस्तककोंगुनवंत
वखानैभलीप्रभुकीकरत ॥ गोरगिरिधारनपूलकीमालप्रवीनमहामपंचम धि
भूत ॥ अकूतगुनीमनिपूतसुलच्छनसेभावहूतधरेलस्योसूत ॥ ५० ॥ सीसपैपागरीटे
ठीवनीडाहारलसैमुकुताहलपोस्यो ॥ बोलाविसालधरेतनमेंसितरंगलसेज्योस
तोगुनवोस्यो ॥ गोरोसोगातगुनीगिरिधारनभावनकोंकविकोंमनमोस्यो ॥ हाथमें
लीनेकपानसुजानमहामनिमंडनमागधसोस्यो ॥ ५१ ॥ अँठिकैपागरीटेठीकसेमु
खतेंवतियोंकहैलोकअनंदी ॥ अंवरचित्रधरेगिरिधारनजुक्तिविचछनबुद्धिअमं
दी ॥ भूषनअंगवनेनवरत्नकेबोलतछंदअवाजविलंदी ॥ हाथमेंचारुलिएवरणी
सुखमाधरूपलस्योइमिवंदी ॥ ५२ ॥ नहुसकोंप्रनामकरिकैठाठेभए ॥ सूत ॥ कवि

न. ना.
२७

त॥ जाहिर पुरान नमैं ब्राह्मन पुरान नमैं आप को प्रतापता हि सुनौ पर पछी वाज ॥ नि
सिम निवंस अवतंस सम निभूप तु व की रति कहत क विभार तीलहत लाज ॥ गिरिधर
दास देव दुल्लभ सदैव जौ न तौ न पद पायो पाय दैव की दया दराज ॥ होय नराज या
हीत नमैं ससाज आज जग सिर ताज भए अमर अकाज काज ॥ ५३ ॥ नहुस ॥ सानंद ॥
सुख साधु ॥ मागध ॥ क. वि॥ परम प्रसंसनीय वंस है तुमारे भूपनहि कं हि जाय भाँति सु
जस प्रताप की ॥ विधिके कुमार अत्रि भए गिरिधर दास विद्या बुधि वीचल ही की रति
ज्यों वाप की ॥ विधु पुनि बुध भे प्रहर वा प्रहृ मि पाल आयु भए जिन राह गही न हीं पा
प की ॥ वायु सेवली जरा यु मुकुट नहुस भूप आयु के कुमार दीह आयु होय आप की
५४ ॥ नहुस ॥ सानंद ॥ मागध साधु ॥ वं दी ॥ क. वि॥ आपके सुजस मधि मिलि रह्यो

२७

छीरसिंधुभटकहिंदैवदेवदेवडिगजानहेतु॥तैसेईप्रतापमाहिंमिलिरह्योभानुता
सोंहोतनहीभानमुनिभटकहिंअर्थदेतु॥गिरिधरदासकहोकैसेकेप्रसंसाकीजेभ
ईअनरीतदूखौचहतधामसेतु॥कोपमेंमिल्योअनलनेकुनालखाइपरेजग्य
कैसेहोयधामग्यकहोकरिकेतु॥५५॥नहुस॥सानंद॥वंदीसाधु॥इमिकहिकंच
नवरनमंत्रीकोंबुलायकै॥वरवै॥कंचनवरनरतनधनकंचनगोहु॥मागधवंदीसूत
नइच्छितदेहु॥५६॥कंचनवरन॥जोआज्ञा॥इमिकहितिनकोंआज्ञानुसारदी
नो॥तवप्रविसेचित्ररथआदिगंधर्व॥अपरासहित॥दोहा॥गोरेसुंदररूपसवगाय
कगुनीअखर्व॥करमेंवैहुवाजेलिएराजेवरगंधर्व॥५७॥विविधवसनभूषनध
रेअंगअंगअविकंद॥मुखप्रकासपसरापुहुमिलसीअपसराबंद॥५८॥प्रनाम

न. ना.
२८

करिगानकरिवेलागे॥कविता॥प्रथमभलीप्रकारकरिकैअलापचारगकोंजमाय
अनुरागउपजावते॥नानकोवितानतानिगानकरैमनिमानमानपैसुजाननपै
धन्यकहवावते॥गिरिधरदासवन्योगुनीकोअखाएखवसुरनकेसप्तकसोंसुरन
रिखवते॥हाथलैसितारनगितारनगितारनकोंवैठिकैकितारनपियारसोंवजाव
ते॥५६॥दोहा॥जवइमिसवगावनलगेगायकसहितविवेक॥तवमिलिसुंदर
अपसरानाचनलगीअनेक ६०॥कविता॥मैनकामिनीसीतावैमैनकाअन
परुपअतिहीकटीलीभौंहवनीजाकीअसीसी॥रंभासीजुगलजानुरंभानिरत
तचारुकंचुकीकसीलीजामैपनिमतिकसीसी॥गिरिधरदासमंजुघोसामंजुगान
करैवदनकीकिरिनप्रकासिरहीससीसी॥निनमहंलसीउरवसीसवउरवसीदे

ववारवाला मालामध्य उरवसीसी ॥ ६१ ॥ दोहा ॥ नवलनाक की नायकानिरतहिं को
टिपचास ॥ विविध वरन सारी लसै पै ली दिसन सुवास ॥ ६२ ॥ कवित्त ॥ सोसनी सुनह
री सवुज सुरमई सरवती सोन जराद सुख सराई है ॥ कासनी कपासी काली कुमुंभी
कनैली काही के सरी कपूरी ककरो जी ककरो टई है ॥ इगुंरी अवासी अगजा असमा
नी आवी ऊजरी अवरखी अवीरी अगाई है ॥ गिरिधारदास वहु रंग सारी धरेनारी ॥
सावन की सांरु विजुरी सी छवि भई है ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ इहिविधान चिरकाल लौं जम्यो
अखारो रंग ॥ सकल सभा प्रमुदिन भई नहु सहि वढ्यो उमंग ॥ ६४ ॥ तव कंचन वर
न कों बुलाय कै ॥ नहु सा नंद ॥ दोहा ॥ अपसर अरु गंधार वएगान नृत्य जिन
कीन ॥ निनहि दान सनमान दै करहु आरजू हीन ॥ ६५ ॥ कंचन वरन ॥ जो आजा ॥

न. ना.
२६

इमि कहितिन को आजा अनुसार मन वांछित दीनो ॥ तव ॥ नहुस ॥ गुरु की ओर देखि कै ॥ दोहा ॥ अवै दिवाकर जात हैं अस्त सै लदिसि एव ॥ सभावि सर्जन की जिये जों
अजा गुरु देव ॥ ६६ ॥ गुरु ॥ दोहा ॥ अर्घ देन को काल यह सभा समय है नाहि ॥ उचित वि
सर्जन सवन को हुकुम देहु रह जाहि ॥ ६७ ॥ नहुस ॥ जो आजा ॥ इमि कहि सभावि
सर्जन करी ॥ तव सब देवता प्रनाम करि करि निकरे ॥ तव गुरु को जात देखि कै ॥
दोहा ॥ सिंहासन सो उठि नहुस च ल्यो ब्रह्मनि संग ॥ बाहर लौं पहुँचाइ कै पलट्यो
सहित उमंग ॥ ६८ ॥ अपने सिंहासन पै जाय वैठ्यो ॥ तव चित्रांगद को बुलाय कै ॥
नहुस ॥ दोहा ॥ जाय करन अवचहत हम नंदन विपिन विहार ॥ चित्रांगद कहु मान
लिहिला वै सुरथ तयार ॥ ६९ ॥ चित्रांगद ॥ जो आजा ॥ इमि कहि कै बाहर निकल्यो ॥

२६

तव प्रविसे वित्रांगद मातली रथ सहित ॥ सवैया ॥ कंचन केल सैं चक्र चलां कच
ला चल मैं चपला फिरै लाजी ॥ हीरन की छतरी पर छत्र छपा कर सी छिति में छ वि
छाजी ॥ नागधजा फहराय रही रथ नागमनीन की झल साजी ॥ ताजी लगे वरवा
जी सुरंग सुअंग जवाहिर राजी विराजी ॥ ७० ॥ तव वित्रांगद ॥ प्रनाम करि कै ॥ दोहा
यह मातलि हाजिर अहै तु रगमनो जव साय ॥ स्यंदन चढि नंदन विपिन बलियै नि
ज रनाथ ॥ ७१ ॥ तव रथ पै सवार हैं कै कछु दूरि चलि दहिने ओर देख्यो वन ॥ कवित्त ॥
हरित घटा से सो हैं सघन विटप चंद सीतल समीर चार ओर सों रूकोरे लेत ॥ विविध प्र
सून की पराग उडै अंवर लौं मनहुं सुगंध सिंधु ॥ मग्यो हलोरे लेत ॥ गिरि धरा सवो लैं
खग बहु नग वैठि डोलैं मगना नाभांति छिति छवि छोरे लेत ॥ सीतवन वावरी वनज

न. ना.
३०

वनवनेघनेमनजवठावतोसवनमनचोरेलेत॥७२॥तव॥मातलिकीआरेदेखिके॥
नहुस॥सानंद॥दोहा॥देखनीयकमनीयअतिउपवनयहरमनीय॥अहेकौनको
सोकहुहुलग्योमोहिअतिप्रीय॥७३॥मातलि॥दोहा॥यहसवरितुसोभाभख्योसुख
मयपूरनकाम॥महाराजकोविपिनहैनंदनयाकोनाम॥७४॥नहुस॥सानंद॥
॥सीघ्रचलहुसीघ्रचलहु॥तवमातलिरथवढायनंदनवनमेंगयो॥तहांकी
सोभादेखिके॥नहुस॥सानंद॥सवैया॥कहाकहियैश्रविभाखीनजायमिलैते
हिजाकोवडोजगभाग॥लसैवहुपादपपूलेफूलेगिरिधारनसोहतवापीतडाग॥
मिलिंदफिरैअरविंदनपैलखिसोभाअनिंदवढैअनुराग॥भख्योमकरंदनचंदन
सौलसैदेवअनंदननंदनवाग॥७५॥अैसेकहतवावनमेंफिरनलाग्यो॥फेरि

एथे वै वैठि मातलिकी ओर देखि वै ॥ नहुस ॥ दोहा ॥ गई जाम डक जामिनी वाढ्यो अंग
अनंग ॥ अंतह पुर चल सुरथ लै मिलौं कामिनी संग ॥ ७६ ॥ मातलि ॥ जो आजा ॥ इमि
कहि कै सव नि करे ॥ इति नहुस नाटके रती यों कः ॥ ३ ॥ तव प्रवि सी इंद्रा नी ॥ ओचे
टी ॥ सवैया ॥ दीप सिखा सी दिपै दुति देह की सरति सों रति डोलै लजानी ॥ सारी सपेद
महीं न धरे ससिकी कला ज्यों विजुरि लपरा नी ॥ ध्यान हिये गिरिधारन को व्रत सों रु
स अंगल सैं मुद दानी ॥ सोही सयानी महा छवि सानी भवानी सी सुंदर सक्की रा
नी ॥ १ ॥ गोरो सो गात गरुभरी दृग बंचल ता सफरी गति मेटी ॥ नील दुकूल धरे छवि
मूल मनो सुंदर आई मुजा भरि मेटी ॥ का कहिये गिरिधारन रूप अहै किधौं दजी पुलोम
की वेटी ॥ विजुस मेटी अखेटी करि विधि सो भाल पेटी लसी इमि चेटी ॥ २ ॥ इंद्रा नी

न. ना.
३१

दुःख सहित ॥ दोहा ॥ अत्रासुर भयभीत है जव सों गए सुरेस ॥ तव सों भयो मिला पनहिं
होत कलेस विसेस ॥ ३ ॥ चेटी ॥ हाथ जोरि कै ॥ दोहा ॥ महरानी तुम जो कहो सो कष्ट मिथ्या
हेन ॥ पिय निय को जिय जगत में ताविन कै सो चैन ॥ ४ ॥ इंद्रानी ॥ सजल नयन करि
कै ॥ दोहा ॥ सुनियत नहु सनेरेस को इंद्रासन गुरु दीन ॥ या सों औरहु दुख वठत दिन
दिन काया धीन ॥ ५ ॥ चेटी ॥ सा चरज ॥ दोहा ॥ गुरु की कृपा सहाय सों अत्रि हन्यो सु
रेस ॥ पुनि गुरु ने किमि नहु सकों दियो देव को देस ॥ ६ ॥ इंद्रानी ॥ दोहा ॥ अत्रासुर ब्राह्म
न रह्यो माख्यो तेहि गहि गाज ॥ पिय हन्या भय सों भजे तव दिय नहु सहि राज ॥ ७ ॥ चेटी ॥
चिंता सहित ॥ दोहा ॥ सब समरथ गुरु देव किमि हन्यो न सुरपति दोस ॥ तिन को पद भूप
हि दियो यह हम को अप सोस ॥ ८ ॥ इंद्रानी ॥ दोहा ॥ नहिं जानत अप एध हम को न कि

३१

योऽमरेस ॥ जीवनिठु जासो भए जिन को दया विसेस ॥ ८ ॥ **वेटी ॥** **६ दास है कै ॥ दोहा ॥** जौ
गुरु कियो विचार यह नहु सर है सुराज ॥ तौ यह पद सकृद्विनि कै से है हे काज ॥ १० ॥ **३**
दानी ॥ **अनक विचारि कै ॥ दोहा ॥** अनि कृपाल गुरु देव है संत सिरौ मनि साधु ॥ परि पद
अमा कराय है अमि है संव अपराधु ॥ ११ ॥ **वेटी ॥** **हर्य सहित ॥ दोहा ॥** सत्य आप के वचन
यह मोचित उपजत चाय ॥ विनु गुरु कृपा कटाक्ष के अहेन और उपाय ॥ १२ ॥ **३** **तने**
मैं प्रविश्यो जयंत माता के पद परसि कै ठाठो भयो ॥ इंदानी ॥ दोहा ॥ कहहु पुत्र सुरपुर
खवर पालत जिहि न एनाह ॥ प्रजा सुखी है कै दुखी कै सीस वकों चाह ॥ १३ ॥ **जयंत ॥** **अपे**
तपत पन सो अधिक नाक नृप को प्रतापवर ॥ चलत हुकुम अनुसार सवै जग जीव
देह धर ॥ जो अधर मपथ गहत ताहि गुरु दंड देत गुनि ॥ राज नीति अनुसार प्रजा सो

न. ना.
३२

करहिलेतपुनि॥ सुरलोकपालदिगपालगनहाथजोरिठोठेरहत॥ नहिंनकततनि
कतिनतनतदपिउरगहरपूछ्योमहत॥ १४ ॥ गीहा॥ अधिकपाकसासनसोंसासन
उग्रमुआल॥ तासोंदुखीप्रजासवचहहिंसक्रसुरपाल॥ १५ ॥ इंद्रानी॥ विचारसहि
त॥ दोहा॥ गुरुसुरपतिनहुसहिकियोत्यागिइंद्रनवतात॥ बथान्छोरहेतर्कनाजिमि
ऊसरवरसात॥ १६ ॥ जयंत॥ दोहा॥ जिनगुरुकेपरसादसोंनहुसभयोसुराय॥ जौ
सोइकरुनाकरहिंतौसकतराजपितुपाय॥ १७ ॥ इंद्रानी॥ दोहा॥ पदपंकजपरि
जोरिकरकरिवहुविनयप्रकास॥ कोउविधिगुरुहिमनाइयेतवदुखहोइविनास॥ १८
जयंत॥ सानंद॥ दोहा॥ जननिसत्यतुमकहतिहोगुरुविननहिंगतिऔर॥ सोसमर
थसवकरिसकतनरहिकियौसुरमोर॥ १९ ॥ इंद्रानी॥ दोहा॥ जाहुपुत्रगुरुकेनिक

टधरहुचरनपरसीस ॥ ममविनतीवहुविधिवरनिलावहुइतहिमुनीस ॥ २० ॥ जयंत ॥
जोआज्ञा ॥ इमिकहिकैनिकस्यो ॥ तवप्रविसेगुरुऔजयंत ॥ इंद्रानी ॥ उठिकैगुरुकों
प्रनामकरिआसनपरवैठायो ॥ गुरु ॥ दोहा ॥ पत्नीपरमसुसीलतूपतिवरताअतिध
न ॥ मोहिवुलायोकोनहितसोकहुमैंपरसन्न ॥ २१ ॥ इंद्रानी ॥ सजलनैनकरिकै ॥
दोहा ॥ बहुदिनपतिविष्टुरेभएतजनचहततनप्रान ॥ तुमविनऔरनआसकोउ
कृपाकरहुभगवान ॥ २२ ॥ गुरु ॥ अडिह ॥ बचासुरवधदोसलग्योसुरपालमैं ॥ मा
नसुरेवरछपेनलिनकीनालमैं ॥ जववहहत्यानैसैतवैइतआवही ॥ तुमसोंहोय
मिलापराजनिजपावही ॥ २३ ॥ इंद्रानी ॥ दोहा ॥ सवतुमरेआधीनहैकरहुचहुहुजो
जीव ॥ मैंअवलाजानतनकष्टुविनतुवपदसुखसीव ॥ २४ ॥ गुरु ॥ सानंद ॥ दोहा ॥

न. ना.
३३.

जवकोउविधिसौंनहुसन्तपभूखहोइतजिसाज॥तवसुरपतिअथनासिकैलेहेआप
नोराज॥२५॥इंद्रानी॥हाथजोरिकै॥दोहा॥जिमिप्रमुनहुसनेरेसकोंदियोस्वर्गको
राज॥जिमिअपनीदिसिदेखिकैकरहुभक्तकोकाज॥२६॥जयंत॥प्रनामकरिकै॥
दोहा॥छमाकरहुअपराधगुरुजनककियोजोहोय॥मैंबालकममजननितिय
दोउकीआरतिजोय॥२७॥गुरु॥दोहा॥नुममतचिंताकरहुकष्टुसिद्धहोइगोकाज॥
गिरिहैनहुसअधर्मसोंलहिहैसुरपतिराज॥२८॥इतनेमैंप्रविस्योचित्रांगद॥इंद्र
कीपत्नीलिए॥गुरुकोंप्रनामकरिकैठाठोभयो॥चित्रांगद॥दोहा॥मानसरोवर
मैंगयोलख्योवासवहितत्र॥जिनप्रमुपदहिप्रनामकरिदीनोविनतीपत्र॥२९॥इ
मिकहिपत्रदीनो॥तवगुरुलैकैनाहिपठनलागे॥स्वस्तिश्रीमत्॥सकलगुननि

धान जहौं न महान प्रधान निसान सुजान विद्वान पूज्यमान गीर्वाण प्रानत्रान भग
वान ध्यान भासमान आसमान समान हृदय वेद प्रान ज्ञान दान विधान विचच्छ
न दच्छ निज पच्छ रच्छ कस्वच्छ सदैव भक्त जीव जीवन जीवाभिधान गुरु देव चर
न ए जीवन मै इंदू की कोटि न प्रनाम पढ़ूं चै ॥ भगवत् चरण जल जात वल सों इहों
कुसल है ॥ आगे समाचार ॥ **सवैया** ॥ जादिन सों तुम रे पद पद्म कों त्यागि कै मो मन
मों भुलायो ॥ तादिन सों मुखै दूरि गयो सवने क कहूं विसर मन पायो ॥ १ ॥ स्प पराग अ
लभ्य भए बहु कांटन के मधि जाय लुकायो ॥ भारी विपत्तिके घेरे पखौ तल फै दिन रात
न जात है आयो ॥ ३० ॥ **कु दिन वारनन** ॥ **कवित्र** ॥ माता पिता वंधु पुत्र सुहृद कलत्र मि
त्र त्यागि निज रीत अनरीत कों करै उद्योत ॥ जे जे निरहित अनरित चित्त चहै ते ते प्या

न. ना.
३४

सखगेपासगएसखनसरितसोत ॥ गिरिधारदासकहेमेरुधूरिडेरहोतवीताभरवारि
मैंवि लाय जातदीहपोत ॥ सुमनकरेहोतपेरुसमसेरहोतदिवसअंधेरहोतज
वदिन फेरहोत ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ दोसकौनकोदीजियेमेरेदिनप्रतिकूल ॥ जोगुरुसदा
दयालचितगएदयासोमूल ॥ ३२ ॥ उपालंभ ॥ संवैया ॥ हैंहम आपअधीनसदागुरुके
बिनओरकोउगतिहैना ॥ चाहोजिआवोअपानोविचारिकैचाहोवधोदुखदेहुके
बैना ॥ सांचसुनौगिरिधारनजूतुममालिकरोसकृपाभरेनैना ॥ जोरततोरतइच्छा
जथासिसुकेकरेमैंपरीमैंनकीमैंना ॥ ३३ ॥ निजबतान्त ॥ संवैया ॥ मातापितागुरु
सज्जनबंधुहमारेनोआपहीआपसोजानो ॥ आपहीलौंपिरियादसवैहैकृपाक
रिकैचाहोमानोनमानो ॥ आपहीआपदिखाओहमैंनहिंदूसरीआसनसोकछु

छानो ॥ मानसरोवर त्या गिके जैसे नहं सहि है कहूं और ठिकानो ॥ ३४ ॥ **विसेष विनती ॥**
सवैया ॥ दास सदा अपराधी रहे निवहे इक स्वामी सुदीठि के हेरे ॥ जीव की जौं करनी लखे
ईस तो छूटे न ही भ्रमया भव के रे ॥ संत सुभाव कहौं गिरिधारन उख जथार सदेति है पेरे ॥
दीन दया ल दया करियै अपनो गुनिके हरियै दुख मेरे ॥ ३५ ॥ **दोहा ॥** सत्य कहत लिखि
पत्र पै सुनियै करुना सीव ॥ जिमि जीवन सब जीव को तिमिमम जीवन जीव ॥ ३६ ॥
आगे सुभ ॥ इषि इंद्र को पत्र पठिके ॥ गुरु ॥ **सानंद ॥ दोहा ॥** वित्रांगद कहवा सवहि धीरज
धरु मन माहि ॥ कोउ विधि दै है राज तो हिया महं से सै नाहि ॥ **वित्रांगद ॥ जो आजा ॥ ३**
मि कहिके निकस्यो ॥ तव प्रविश्यो पुलोमां देत्य ॥ सवैया ॥ दीह सवै तन पीन भयंक
र कांस से घास से एजत रोमा ॥ भीस मंदंत विसाल सुडों लसे पूरे गरहिये अति जोमा ॥

न. ना.
३५

अंवरालालधोणिगिरिधारनसीसकिरीटध्रुवैमनुव्योमा॥ कज्जलअंगउतंगमहालस्योस
ज्जलमेघसोदैत्यपुलोमा॥ ३८ ॥ इंदानी औ जयंत उठिके प्रनाम कियो ॥ गुरु कों प्रना
म करिके ॥ पुलोमा ॥ दोहा ॥ आपसवन केई सहो संतत अमर सहाय ॥ हम विन वत कर
जोरिके स करु सुराय ॥ ३९ ॥ गुरु ॥ दोहा ॥ जो विन तीनु मने करी सो इह म चिंतन का
ज ॥ नहु सगिरे को उभांति सों इंद्र होय सुराज ॥ ४० ॥ पुलोमा ॥ दोहा ॥ जौ मोहि अज्ञा
देहु तौ न्यप को करहुं अहार ॥ तव तुम इंद्र बुलाय के करहु स्वर्ग भरतार ॥ ४१ ॥ गुरु ॥ दो
हा ॥ असुर जात तू अग्य हे अनुचित वारनत वात ॥ ऐसी सम्मत नहिं उचित धरम हो
इ जिहिं धात ॥ ४२ ॥ पुलोमा ॥ दोहा ॥ आप कहत सो सत्य गुरु हम न करै गै एह ॥ सुनि
यत धरमात्मानहु स किमि गिरि है संदेह ॥ ४३ ॥ गुरु ॥ दोहा ॥ जदपि धर्म धरनहु स न्यप

तदपि गरुनिधान ॥ तासों गिरि है अवसिसो सक होय सुरत्रान ॥ ४४ ॥ पुलोमा ॥ सानं
दा ॥ दोहा ॥ नाथ आपकी वात सों उपजत अति आनंद ॥ धन्य धन्य गुरु देवता परम प्र
ताप अमंद ॥ ४५ ॥ इमि कहि कै नाचन लाज्यौ ॥ तव ॥ गुरु ॥ मुमुकाय कै ॥ दोहा ॥ लरत
संग संग्राम मै सदा सक सों एरि ॥ तासुराज सुनि मुदित किमि सो मोहि कहु अमर एरि ॥ ४६
पुलोमा ॥ दोहा ॥ जद्यपि वै सुरेस सों लरहिं समर सनमु कब ॥ तद्यपि ना तो कठिन गुरु
रहि न जात लखि दुख ॥ ४७ ॥ गुरु ॥ दोहा ॥ जवलखि इंद्रहि एज पै श्रीहत कै सत एत ॥ उर
मारत सरवज सेतवना तो कित जात ॥ ४८ ॥ पुलोमा ॥ दोहा ॥ बत्र मरन सों असुरगन
ध्वंस्तिरहिं गत साज ॥ तौ या मानव एज सों भलो दमादहि एज ॥ ४९ ॥ गुरु ॥ सन्य सन्य ॥
पुलोमा ॥ दोहा ॥ नाथ नहु सके पतन की मोहि न बुझति उपाय ॥ चलत नीति पथ किमि

न. ना.
३६

गिरै कहियै तौ भम जाय ॥ ५० ॥ गुरु ॥ दोहा ॥ सती सची तुव कन्य का सुचि पति व्रता अनूप ॥
इहि कुदीठि जव देखि है तव वह गिरि है भूप ॥ ५१ ॥ पुलोमा ॥ दोहा ॥ वह परतिय दिसि ना
त कतर मत अप सर संग ॥ किमिय हम तिति हि होय जो होय राज सों भंग ॥ ५२ ॥ गुरु ॥ दो
हा ॥ हम आराधत नारद हि अहे इत मुनि नाह ॥ सो कहि हैं तव सुता गुन तव तेहि उपजे
चाह ॥ ५३ ॥ पुलोमा ॥ दोहा ॥ जौ सो धरम निधान है लखत न परतिय ओर ॥ तौ किमि ना
रद के कहे पाप च है नर मोर ॥ ५४ ॥ गुरु ॥ दोहा ॥ हम काम हि अज्ञा करत सो तित होत सहा
य ॥ सती चाह चित मैं चढै तौ वह आसुन साय ॥ ५५ ॥ पुलोमा ॥ दोहा ॥ जौ वह बैकै का
म वसर मै सची वर जोर ॥ काज होय तव होय गुरु लगे पाप इहि घोर ॥ ५६ ॥ इत नो मुनि ॥
इंद्रा नी सह मि कै मुरछित होय गिरि परी ॥ तव जयंत उरि कै ॥ सीत लज लछिर क्यो ॥

३६

जयंत॥ दोहा॥ उठहु उठहु धीरज धरहु जननी नहिं दुख काल॥ गुरु कौ तुम कों आसरो
सो अति दीन दयाल॥ ५७॥ अैसे मुनि सची उठि वैठी॥ तव॥ सची॥ समय॥ दोहा॥ अैसे
जत नहि जनि करहु गुर परवीन दयाल॥ जामैं जावै नित धरम मोहि चहै नरपाल॥ ५८
गुरु॥ दोहा॥ सती सोच कछु जनि करहु है सब मेरे हाथ॥ धरम न तुम रो जाय है गिरि है मा
नव नाथ॥ ५९॥ सची॥ दोहा॥ और तौरत वीर करि करहु नहु सकौ भूख॥ तुम समर थ
सव करि सकत जिमि मोहि होय न कछ॥ ६०॥ गुरु॥ श्रवण॥ जव नारद के कहे चाहनु व
न पडै आवै॥ दूती को बुलवाय पास तुम्हरे पठवावै॥ तुम ता सोई मि कहहु मोहि नाही
कछु नाही॥ सत्र रि सिन मुख पाल जो रि आवै मम पाही॥ वह काम विवस करि है सोई
देहैं साप अगस्त मुनि॥ तव गिरै धरम तेरो रहै सधै सक को काज पुनि॥ ६१॥ दोहा॥

न. ना.
३७

अधरमविनुगिरिहैनहीनंडुसन्पतिधरमिष्य ॥ तासोंयहीउपायहेकिएसंधेसवइष्य ॥
६२ ॥ सची ॥ दोहा ॥ तुमसवसंतअनंतगुनसंततसीलसुभाय ॥ जोंनसापमुनिदेहिंतौ
धर्महमारोजाय ॥ ६३ ॥ गुरु ॥ दोहा ॥ क्रोधहिपठवतहमतहोंजायरेहरिसिपास ॥ सापदे
हिंनरनायकहितवधुवहोइविनास ॥ ६४ ॥ सची ॥ सानंद ॥ दोहा ॥ मलीविचारीआपगु
रुधर्मनिधानसुजान ॥ सोइकरियैकरिकैदयाजामेंममकल्यान ॥ ६५ ॥ जयंत ॥ सानं
द ॥ दोहा ॥ जोप्रभुआपविचारिहोसोइमेरोहितपर्म ॥ नुरतकृपाकरिकीजियैजोअव
करतवकर्म ॥ ६६ ॥ पुलोमा ॥ सानंद ॥ दोहा ॥ विनतीसुनीगरीवकीआपगरीवनेवाज ॥
अवहमजातप्रनामकरिसध्योसक्रकोकाज ॥ ६७ ॥ गुरु ॥ साधुसाधु ॥ तवपुलोमाप्र
नामकरिकैनिकस्यो ॥ गुरुप्रनामकरिकैनारदकोध्यानकरिवेलागे ॥ इतनेमें ॥ ने

३७

पथ्यमें॥ परमप्रकासभयो॥ तव॥ गुरु॥ सानंद॥ दृष्टिदेंके॥ दोहा॥ अंवरमनिसमतेजय
हअंवरमेंप्रगटान॥ जानिपरतआवतअहैंइतनारदभगवान॥ ६७॥ इतनेमेंप्रविसेनार
द॥ कवित्त॥ सोहैंरिसिनारददिपतदुतिपारदसीसारदसीमतिवहुजीवनउधारकियो॥
मुनिनकेमनिपुनिमनमनमोहनकेज्ञानपरभावजिनजगखेलवारकियो॥ गिरिध
रदासलिएकरमेंनवीनवीनछविकहिबेकोंकविमतिइनकारकियो॥ रागपाएवा
रपारजानकोविचारकरिमानोविवित्वा निरधारकैअधारकियो॥ ६८॥ तवगुरुने
उठिकेप्रनामकियो॥ सचीऔजयंतपावनपैंगिरपरे॥ तवनारदनेआसिरवाददि
यो॥ फेरआसनपरवैठे॥ नारद॥ दोहा॥ कहहुपुत्रकैहिहेतनुमध्यानधर्योममआज॥
जामेंतुवहितहोयहैसोहमकरिहैंकाज॥ ६९॥ गुरु॥ अथ॥ ब्रह्मासुरवधदोससत्र

न. ना.
३८

भाग्यौजवडरिक्के ॥ नहुसहिमुपराजदियोतवसंमतकरिक्के ॥ सोअतिउग्रप्रभावप्र
जासवदुखअतिपावे ॥ तासोंइंद्रहिराजदेनअवमममनआवे ॥ तेहिहेतअराध्योआ
पकहेंनपहिसचीकेगुनकहिय ॥ इहिचहैसापमुनिसोंलहैयहकारजसाध्योचहि
य ॥ ७१ ॥ नारद ॥ सानंद ॥ दोहा ॥ भगवतइच्छासोंसुखनतोहिभईमतिएह ॥ नपहिस
चीगुनवरनिहोंजिमितेहिउपजेनेह ॥ ७२ ॥ असेसुनिक्के ॥ गुरुनैउठिक्केप्रनामवि
यो ॥ नारद ॥ सानंद ॥ पुत्रजीवचिंजीव ॥ अवहमजायहैं ॥ इमिकहिकैनिकरे ॥ तव
गुरुमनमैंकामकोध्यानधारनलागे ॥ इतनेमैं ॥ नेपथ्यमैं ॥ सबैया ॥ चंदसमानअ
मंदलसैंमुखचोंदनीसीसवअंगउंजारी ॥ कंजसेनैनमुधासमवेनविलोकनिवं
कवनीमनहारी ॥ याजगमेंगिरिधारनजूडकतत्वरच्योतरुनीजगकारी ॥ नारीवि

३८

हारी ते ईमति धारी हैं जे जे अनारी हैं ते ते अनारी ॥ ७३ ॥ गुरु ॥ सानंद ॥ कान दें कै ॥ दोहा
करत वडाई वाम की वरनत गुन अभिराम ॥ मो कहें मालुम परत है आवत या थल का
म ॥ ७४ ॥ तव प्रविश्यो काम ॥ सवैया ॥ मुकता हल सी दम कै दुति देह की अंवर नील छ
जै छवि धाम ॥ मकर कृत कुंडल कानन में गिरिधारन कंठ में कंज की दाम ॥ कर में धनु
सायक फूलन के सिर सौ हैं किरि टल गैं ससि छाम ॥ सरनाम महा अभिराम ललाम
लस्यौ गुन गनाम मनोहर काम ॥ ७५ ॥ गुरु कों प्रनाम करि कै ठाठो भयो ॥ गुरु ॥ दोहा ॥
स्वागत काम अमेय वल साधु डक मम काम ॥ वसहु नहु सत न गनाम जिमि वा है वास
व काम ॥ ७६ ॥ काम ॥ सानंद ॥ यह कौन तुच्छ बात है ॥ हमारे वल लोकन में विख्यात है ॥
कविता ॥ धरम निधान वेद वक्ता प्रधान विधि सुता को सरूप जो हिमति तिन की छली ॥

न. ना.
३६

मेरे परभाव विष्णु मूरति स तो गुन की आठो जामरा खत हैं लच्छमी हूँ दैयली ॥ गिरिधर
दास संभु गौरी अरधंग सदा मोहनी निहारि मोहे मम प्रभुता फली ॥ तीन देव मेरे वस औ
र न की कौन वात डूवैं जहां गज तहां अज की कहावली ॥ ७७ ॥ दोहा ॥ वसों अखिल ज
ग अंग में मेरे नाम अनंग ॥ प्रथम हरन पितु को करौं तव साधों निज ठंग ॥ ७८ ॥ गुरु ॥
सत्य सत्य ॥ काम ॥ दोहा ॥ तु व अज्ञ अनुसार हम जात नहु सकी देह ॥ अल्प काल में
भूप कों बढे सची परनेह ॥ ७९ ॥ इमि कहि कै निकस्यो ॥ तव ॥ गुरु ॥ मन में क्रोध को ध्या
न धरन लागे ॥ इतने में ॥ ने पथ्य में ॥ सवैया ॥ जो को उओर हमारी लखे दुत आंगु रीठ
रि कै आंख निकारौं ॥ नाक मलों बुटु की करि कै अरु मोछ डखारि कै दरिपवारौं ॥ गाल
कों लाल करौं थपए न सों क्यों गिरिधारन रोस निवारौं ॥ काल तौ मैं ही कराल अहौं

३६

जगको अस वीर न जा कहें मारौं ॥ २० ॥ गुरु ॥ सानंद ॥ कान दें कै ॥ दोहा ॥ बल कत सो अ
पने मन हिं बोलत वचन कठोर ॥ मोहि बुझत इमि क्रोध अव आवत है इहि ठौर ॥ २१ ॥
तव प्रविश्यो क्रोध ॥ सवैया ॥ वन्यो तन लाल विमल महा करमैं कैं बाल लिए वज्रो ॥
अंगारन से दो डलोचन लोल ॥ उसां सव डी अहि ज्यों कियो रोध ॥ दिपे दुति दामिनि सी
गिरिधारन देखत रूप ॥ दै भय पोध ॥ विरोध को सोध सदा ॥ ईवी च प्रबोधन ने कुल स्यो ॥
मि क्रोध ॥ २२ ॥ गुरु ॥ कौं प्रनाम करि कै ठाठो भयो ॥ गुरु ॥ दोहा ॥ स्वागत क्रोध प्रताप
रकरहु कज इक आप ॥ प्रवि सहु अंग अगस्त के देहि नहु सक हें साप ॥ २३ ॥ क्रोध ॥ सानं
द ॥ यह बात कौन दुरघट है ॥ हमारे प्रताप विस्व में पर घट है ॥ कवित्त ॥ सिख की परिच्छ
हित गयो भृगु ब्रह्म लोक ॥ ठे विधि दंड लैं कै कही कटु बात है ॥ भृगु नित्य ब्राह्मणी कौरन

न. ना.
४०

कै

मैं निपाती विष्णु मेरे परताप संभु दह्यौ काम गात है ॥ गिरिधर दास इन तीनों के अधीन ज
गते ईव स अहैं ओर को महान ख्यात है ॥ कुंभिन के कुंभ जौ न तौ रै मर कुंभ सम सिंह कों
अपरम गवध को न वात है ॥ २४ ॥ दोहा ॥ गुरुबंधु जननी जनक नातो देत मुलाय ॥ अ
न कहनी कहनी कहत मो सम को मुनिराय ॥ २५ ॥ गुरु ॥ सत्य सत्य ॥ क्रोध ॥ दोहा ॥
हम सिर धरितु मुरे हुकुम कुंभ जके तनु जात ॥ साप दिवावत नहु सकौ थोरे इकाल वि
लात ॥ २६ ॥ इमि कै निकल्यो ॥ तव ॥ गुरु ॥ दोहा ॥ अवतु मरो कारज सध्यो पात नहु सको हो
य ॥ आवत है संध्या समय सदन चलहु दुख खोय ॥ २७ ॥ सची जयंत ॥ सानंद ॥ हाथ जो
रि कै ॥ जो आजा ॥ इमि कहि कै सब निकरे ॥ इति नहु सनाट के चतुर्थो डू ॥ ४ ॥ तव ॥ प्रवि
से नहु स औचित्रांगद ॥ राजा अपने सिंहासन पर वैठ्यो ॥ तव नहु स ॥ दोहा ॥ अमर रा

जयहअतिकठिनइमिवरनहिंपरवीन॥पेहमनिजपरभावसोंकरअमलकवतकीन॥१॥
॥चित्रांगद॥सत्यसत्य॥इतनेमैंप्रविश्योसुदरसनछडीदार॥प्रनामकरिठाठोभयो॥सु
दरसन॥हाथजोरिकै॥दोहा॥महाराजनिरजरमुकुटअखिलविस्वत्रातार॥नारदमुनि
ठाठेअहेतुमहिंमिलनकोडार॥२॥असोसुनिकैराजानुरतनिकस्यौ॥तवप्रविसेनार
दऔरनहुस॥राजनैनारदकोडुंवेआसनपरवैठायो॥फेरआपुनेआसनपैंजायवै
छ्यौ॥तव॥नहुस॥हाथजोरिकै॥दोहा॥हंसकेतुसुतहंसमतिहंसतेजछतिनाहिं॥जीव
नकेडिछारहितअटवीअटतसदाहिं॥३॥नारद॥दोहा॥साधुसाधुससिवंसमनितोपैं
मेरोनेह॥सवराजनमैंअछहैसक्रमयोनारदेह॥४॥नहुस॥सानंद॥दोहा॥यहसवप्र
मुपदपदुमवलमोरनकछुपरभाव॥जोचाहतसोकसिकतसंतदयालसुभाव॥५॥

न. ना.
४१

नारद॥ दोहा॥ तोहि सुरपति पदजोगगुनिदियो ब्रह्मपति राज॥ जोमनुचंद्रहुनालख्यो
सोपायो सहसाज॥ ६॥ नहुस॥ सानंद॥ दोहा॥ जगत आपुहस्तामलक जानत सबविबु
धेस॥ सकसरिसकै न्यूनवठहमपालत यहदेस॥ ७॥ नारद॥ दोहा॥ सकसरिससवर
जविधिकरतनीतिकी रिति॥ पैवढतेरोतेजकष्टमोकहं होत प्रतीति॥ ८॥ नहुस॥ दोहा॥
वासवसों वठिकै कष्टो मेरो स्वर्ग प्रताप॥ अवजोतासों न्यून है सो उकहियै आप॥ ९॥ ना
रद॥ दोहा॥ सबसमाज सुरराज को तैं पायो मुददानि॥ पै इंद्रानीनालही जोतियमनि
रसखानि॥ १०॥ नहुस॥ दोहा॥ रंभा आदिक अप्सरा मन करहिं मम साथ॥ काइन हूं सो
दठिसची जो परसंतनाथ॥ ११॥ नारद॥ दोहा॥ सचीरची निज करहि विधिसवसों अ
धिक प्रसस्त॥ तव तेहि व्याही विबुध पतित जि सुरमुता समस्त॥ १२॥ नहुस॥ कामाकुल॥

४१

दोहा॥ तासों चहत विहार हम इंद्रासन आसीन॥ कहियै प्रभु किमि सो मिले आपदयाल
प्रवीन॥ १३॥ नारद॥ दोहा॥ है पतिव्रता पुलोमजा पतित जिअ परन आस॥ ताको धूरस
न करहु जनि कीने होय विनास॥ १४॥ नहुस॥ जो आजा॥ नारद॥ दोहा॥ ब्रह्मलोक अव
जात हम पितु पर पूजन काज॥ सावधान कै करहु तुम स्वर्गलोक को राज॥ १५॥ इमि कै
कहि कै निकरो॥ तव॥ राजा वाहर सों पहुँचाय कै अपने आसन पै आय कै वैठि सची को रूप
बितन लग्यो॥ इतने में॥ ने पथ्य में॥ सवैया॥ को किल वो लिउछ्यो कलवानी मनोजने मा
नोन फीरी वजाई॥ जों को सो आयो सुगंधन को ज्यों गुलाव सों होय दिसा छिर काई॥ का क
हियै गिरिधारन जूजिमि सावन सो भानदी डमडाई॥ काम की पीर सी जागी सरि रस मीर
मैं ज्यों कस मीर मिलाई॥ १६॥ तव॥ नहुस॥ दृष्टि देखै॥ दोहा॥ बोलत को किल मधुरधुनि

दिसनसुगंधविराज ॥ मोहिवुझतहेयाथलहिआवतहेरितुएज ॥ १७ ॥ **इतनेमें ॥ प्रविस्थो**
वसंतरितु ॥ सवैया ॥ मनोहरमूरतिसोंवरेअंगअनंगविराजैमनोतनवंत ॥ रसालकीमं
जरीकाननमें ॥ उरमालगुलावसुगंधसमंत ॥ **किरीटलसेनवमहिकाकीगिरिधारनसो**
भाप्रकासदिगंत ॥ अनंतगुनीरतिकंतकोमंत्रीलसोइमिसोरितुकंतवसंत ॥ १८ ॥ राजाको
प्रनामकरिकैठाठोभयो ॥ राजा ॥ दोहा ॥ स्वागतस्वागत रितुमुकुटहोसुखिसुखदविनीत ॥
तुम्हहिदेखिमोहिऔरहवढीसचीपरप्रीत ॥ १९ ॥ **वसंत ॥ दोहा ॥** सचीआपकेजोगहैगुस्की
नोसुरत्रान ॥ अभिलाखामहराजकीपरवैश्रीभगवान ॥ २० ॥ **तव ॥ नहुस ॥ सानंद ॥ आत्म**
गत ॥ दोहा ॥ केहिप्रकारसोंपाइयेसतीसककीवाम ॥ दूतीहोयप्रवीनतौसाधेयहम
काम ॥ २१ ॥ **तवचित्रांगदकोंबुलायंकै ॥ प्रकास ॥ दोहा ॥** सबदूतिनमेंनिपुनजोहोयस्वर्ग

अस्थान॥ दृष्टि लावते हिमोनिकट पठवों सची मकान॥ २२॥ चित्रांगद॥ जो आज्ञा॥ इमिक
है कै निकस्यो॥ प्रेरि प्रविश्यो॥ दूती सहित॥ सवैया॥ देखत मोली महाचतुरी मधुरे मुखवे
न कहै जिमि नूती॥ घाले कई घर कोरि प्रपंच कै लागत साधु सी चाल अछूती॥ उज्जल
अंबर अंगल से गिरिधारन काम कला करनूती॥ जंत्र मैं मंत्र मैं तंत्र मैं दच्छ सुतंत्र प्रवी
न लसी इमि दूती॥ २३॥ तव॥ चित्रांगद॥ प्रनाम करि कै॥ दोहा॥ दूती मुख्य सुरेस की परम
विचछ न रह॥ या सों निज इच्छित कहहु साधे काज सनेह॥ २४॥ नहु स॥ सानंद॥ दोहा
स्वागत दूती साधु नुम्हें चाहत सविवाम॥ जौं मम परहु काम यह परहुं तु व मन काम॥ २५॥
दूती सवैया॥ मोहि कहौ तो घरी इक मैं दि सि पछिम सरु उदै करौं आला॥ मीठो करौं जल
सागर को प्रगटावौ हुतासन अर्चि सों पाला॥ सांच कहौं गिरिधारन काठि कै बालू कोते

न. ना.
४३.

लकरोँ उँजियाला ॥ व्योमके पूल कीमालारचौँ अरु सोमसों काढौँ हुतासनज्वाला ॥
२६ ॥ दोहा ॥ यह हमसवसहजहिं करत चाहौ लखो मुआल ॥ पै वहसचीपतिव्रतानेहिनु
वचाहमुहाल ॥ २७ ॥ नहुसचिंतासहिता ॥ दोहा ॥ नारदनैनिजमुखकह्योसचीसतीवर
वाम ॥ तुमहुँ कहतनहिं आइहे मोहिसतावतकाम ॥ २८ ॥ दूती ॥ दोहा ॥ जौतुमकामाकु
लभएतौहमगवनततत्र ॥ कोउप्रकारसोलायहौँ जौँ वहअैहै अत्र ॥ २९ ॥ नहुस ॥ दोहा
दूतीजाहुसुजानतुमकरेहुजतनसोंकाम ॥ हेवहसतीसमर्थजिमिदुखनहोयपरिना
म ॥ ३० ॥ दूती ॥ दोहा ॥ मोहिकहहुसोकरहुँमैंसिधरिएजनिदेस ॥ निजसकभारनहिं
बूकिहौँआगेचाहरमेस ॥ ३१ ॥ नहुस ॥ अष्टम ॥ प्रथमजायकैकरहुमोरगुनवरननभारी ॥
जिमिचितउपजैचाहवहैमोहिआपुहिनारी ॥ वहुरिकहहुममविरहसुविधिसमतास

४३.

मुग्धवहु॥ इमिछलवलकरिचतुरइहों आवैतौलावहु॥ वरुनहिं आवैतौनहिंसही पैनरिसा
वैकरेहुइमि॥ यहलालचमैंपरिव्याजकीहोयनमूलविनासजिमि॥ ३२॥ दूती॥ दोहा॥
जिमिमोहितुमआज्ञाकरीतिमिकरिहोंसुराय॥ त्रिविधिपवनअहअपसरारितुपतिदेहु
सहाय॥ ३३॥ नहुस॥ साधुसाधु॥ इमिकहिवसंतकोंबुलायकै॥ नहुस॥ दोहा॥ तुमदूतीके
संगमैंगवनहु रितुपरधान॥ होयसचिहिममचाहजिमिसोविधिकरहुसुजान॥ ३४॥ व
संत॥ सवेया॥ दलहकामकेमोरसेसुंदरआमकेमोरसोंकुंजछवाड़ि॥ केसरकिंसुककं
जकुसुंभअनेकनफूलकेवागलगाड़ि॥ कोकिलकेकलकूकनिसोंगिरिधारनचौगुनो
चाहचढाड़ि॥ दारकीनारिजौहोयतडिउरमाहिंउदीपनदीपजगाड़ि॥ ३५॥ नहुस॥
सत्यसत्य॥ इमिकहिविचित्रांगदकोंबुलायकै॥ नहुस॥ गाहा॥ तुम्हविचित्रांगदगवनहुकर

न. ना.
४४

हुकाजसतभाय॥ त्रिविधिपवनअरुंभालावहुइहां बुलाय॥ ३६॥ **चित्रांगद॥** जो अज्ञा॥
इमिकहि निकस्यो॥ **पेरिप्रविश्यो॥** त्रिविधपवनरंभासहित॥ सवैया॥ धीरिमहागतिमंद
गयंदसीमेघसोरूपअनूपलखायो॥ लागतगातलगै अतिसीतलहीतलकामकोता
पजगायो॥ **पूरिसुगंधदिसासिगरीमलयाचलमानोअदृश्यद्वेआयो॥** सोछोमनो
जप्रधानसुजानजो त्रैविधिपौनपुरानमेंगायो॥ ३७॥ वरवालेविसालविराजतकान
नमोतिनचौलरीसोहैहिया॥ **उरजातअनूपमउन्नतडूजिनपैकसीसोहैनईअंगि**
या॥ गिरिधारनसोभाकहाकहियैविधिनैमनुरूपकोराजदिया॥ नवरंभकेखंभसीडि
रुलसैइमिरंभालसीसुरवारतिया॥ ३८॥ **तव॥** **चित्रांगद॥** नहुसकेनिकटजायप्रनाम
करिकै॥ दोहा॥ त्रिविधिपौनरंभासहितहाजिराजसमीप॥ इन्हकहेंजो अज्ञाकरियसो

करिहैं अवनीप ॥ ३९ ॥ नहुस ॥ चित्रांगदसाधु ॥ इमि कहि त्रिविधि पौन कों बुलाय कै ॥ नहुस ॥
दोहा ॥ त्रिविधि पवन तुम सची डिगगवन नहुदूती साथ ॥ त्रैसी विधि तापें करहु निमि उपजे
रति नाथ ॥ ४० ॥ त्रिविधि पौन ॥ सवैया ॥ सीतल बहे हरौ हीत लता पचलौ गति मंद सुगंध
भरौ महि ॥ प्रथम पराग उठा डुं दिसान मुनी स प्रधान करौ वस मै चहि ॥ सांच कहौ गिरिधा
न रंज प्रगटौ रमाहि उदीपन दीपहि ॥ होय जौ वज्र समान हियो त डुं छेदौ प्रसून को वान
करै गहि ॥ ४१ ॥ नहुस ॥ सत्य सत्य ॥ इमि कहि रंभा कों बुलाय कै ॥ नहुस ॥ दोहा ॥ तुम रंभा
अति चतुरचित जाहुदूतिका संग ॥ इमि अलापन हें कीजियो व्यापे सविहि अमंग ॥ ४२ ॥
रंभा ॥ सवैया ॥ काम उदीपन दीप सिखा समराग को रूप अनूप दिखा डुं ॥ लै कै विपंचीव
जा डुं मली गिरिधारन मोद रूरी सी लगा डुं ॥ मै अलंवन आप अहौ अनुराग नराग उ

तौ

न. ना.
४५

दीपनगाँॐ॥औरकहाँलौंकहोंअपनेगुनपाथर(उपरद्वजमाँॐ॥४३॥नहुस॥सत्यस
त्य॥इमिकहिदूतीकीदिसिदेखिके॥नहुस॥दोहा॥तुमदूतीअवजायकेलावहुसची
लिवाय॥रितुपतित्रिविधिसमीरअरुंभालेहुसहाय॥४४॥दूती॥जोआज्ञा॥इमिक
हिकैरितुरौनत्रिविधिपौनरंभासहितनिकरी॥पेरिप्रविसीतिनकेसहित॥तव॥राजा
केनिकटजायके॥दूती॥दोहा॥हमसमुझयोविविधिविधिजिमिमोहिकह्योसुरीति॥
ममसंगिननिजगुनकियोपैतेहिभईनप्रीति॥४५॥तव॥वसंतकोंबुलायके॥नहुस
चिंतासहित॥दोहा॥तुमरितुमंडनचतुरमनिसवलायकमतिधाम॥किमिअैसीमति
नाकरीजिमितेहिउपजैकाम॥४६॥वसंत॥सवैया॥साजेलतानकेआछेवितानप
रागनकीपरमाप्रगयानी॥कामकेवानसेपूलेपलाससोहावनीबोलतकोकिलवा

४५

नी॥ कंजसरोवरमैं विकसे गिरिधारन भौर की ओर ^{लि} लुभानी॥ उद्यम व्यर्थ सती ठिगए
भए पाथर पै वरस्यो जिमि पानी॥ ४७॥ तव **त्रिविधि पौन कों बुलाय कै॥ नहुं स॥ चिंता**
सहित॥ दोहा॥ त्रिविधि पवन बुधि भवन तुम गए सची के पास॥ ता को मन मोखो न किमि
सुंदर पूरि सुवास॥ ४८॥ **त्रिविधि पौन॥ सवैया॥** सीतल ही चलिकै गति मंद प्रसून परा
ग को सार उडायो॥ ता पर जाय कियो अभिसेक गुलाव करवो मनो ठर कायो॥ रागन
को मधुरे रवलै गिरिधारन कानन लौं पहुँचायो॥ एकहु कामन आयो सती पहें ऊँस
रमैं जिमि वाग लगायो॥ ४९॥ **तव॥ रंभा कों बुलाय कै नहुं स॥ चिंता सहित॥ दोहा॥ रंभा**
गान प्रवीन अति वीन अलापन दच्छ॥ किमिन सची मन मोहिकै लाई इतहि समच्छ॥
५०॥ **रंभा॥ सवैया॥** वीन वजाय मनोहर भोंति मनोज के फौज सी गीत अलापी॥ जो

न. ना.

४६

मुनि कै रुके देव विमान न दी जल में थिरा चिराया पी ॥ चित्र से आए मृगा जुरि कै
खग बंद में चंचल तानहि व्यापी ॥ व्यर्थ सती ढिग एगिरि धारन स्वर्ग मनोर्थ करै
जिमि पापी ॥ ५१ ॥ यह मुनि कै नहु स मु रु छित भयो ॥ तव ॥ दती ॥ दोहा ॥ महाराज नि
रजर मुकुट सावधान ब्रै जाहु ॥ तेहि बांधी इक वात में ता कहें सुनहु सचाहु ॥ ५२ ॥
नहु स ॥ सावधान ब्रै कै ॥ दोहा ॥ कहु दती केहि वात में बांधी सची सुजान ॥ मैं सोई वि
धिकरुं गो जिमि सुख मिलै महान ॥ ५३ ॥ दती ॥ दोहा ॥ जोरि सप्र रि सिपाल की इत
आवैं न रात ॥ तो मैं करुं विहार संग सची बांधी यह वात ॥ ५४ ॥ नहु स ॥ चिंता सहित ॥
दोहा ॥ जगत पूज्य रि सि सात हैं ते किमि होय कहार ॥ यह ओरु दुखट अहे साप हो
त नहिं वार ॥ ५५ ॥ दती ॥ दोहा ॥ जदपि सकल सामर्थ मुनि तदपि दयाल सुभाव ॥ जो

४६

तुम करिहौ विनयतौ संधै काजन रराव ॥ ५६ ॥ नहुस ॥ दोहा ॥ दूती साधु भली कही दया
वंत मुनि नाहु ॥ नि नहिं बोलि हम नति करत तुम अव इत ते जाहु ॥ ५७ ॥ दूती ॥ जो आजा ॥
इमि कहि कै नि करी ॥ तव ॥ वसंत त्रिविधि पौनरंभा कों बुलाय कै ॥ नहुस ॥ दोहा ॥ रितु ना
य कत्रै विधि पवन रंभा तुम सव जाहु ॥ याद करै तव आइ यो करेहु विलंबन काहु ॥ ५८
वसंत त्रिविधि पौनरंभा ॥ जो आजा ॥ इमि कहि कै नि करे ॥ तव ॥ चित्रांगद कों बुलाय कै ॥
नहुस ॥ दोहा ॥ सप्त रिसि न पै जाइ कै मेरो कहहु प्रनाम ॥ ल्या बहु इतै बुलाय कै तव मै
साधों काम ॥ ५९ ॥ चित्रांगद ॥ जो आजा ॥ इमि कहि कै नि कस्यौ ॥ तव ॥ प्रविसे चित्रांगद
सहित सप्त रिसि ॥ सवैया ॥ मति उज्जल उज्जल धोती धरे जस ध्यायो दिसा छिति व्योम
छुर ॥ सिर भार जटा कोल सै गिरिधारन पूल अनेक नगं थेहु र ॥ उपवीत विराजत सेतम

न. ना.
४७

हालखिआननकीछविपापमुए॥ कहिजातनसोभाप्रभाधरगातप्रभातमनोरविसा
त३ए॥ ६९॥ तव॥ राजासिंहासनसों३ठिके॥ सप्ररिसिनकेपदनपैंपख्यौ॥ फेरिआस
नपैंवैठाइकेअपनेसिंहासनपैंजायवैख्यौ॥ तव॥ नहुस॥ प्रनामकरिके॥ सवैया॥ आ
पसवैसुभपुन्यसरूपअनन्यमुकुंदमैविस्वनिरेखत॥ दजेदयाकरताकरतार३दा
एत्रिकालकोहालपरेखत॥ सर्वसमर्थसदागिरिधारनतद्यपिजीवकेदोसनदेखत॥
वेदनकेगुनौभेदनकोंजनखेदनकोंकरौछेदनदेखत॥ ६९॥ सप्ररिसि॥ दोहा॥ साधु
साधुतुमअमरपतिहमप्रसन्तमतिधाम॥ अपनोवांछितकहहुमोहिसोहोमक
रिहैंकाम॥ ६९॥ नहुस॥ छप्पय॥ हमइंद्रासनलख्यौनाथपदपंकजातवल॥ पैइंद्रा
नीरमनचाहइकअहैहृदैयल॥ ताहितविनतीकरतकृपाकरिपूरियआसा॥ आप

४७

सवै भगवानमक्त भयहरनखुलासा ॥ ममम्या नो कंध उठाय केवल सची के निक
ट मुनि ॥ तौ मो सों करे विहार वह करुना करिये दीन गुनि ॥ ६३ ॥ अंगिरा ॥ क्रोध सहित ॥
सवैया ॥ देव के राजा अदेव के राजा नरे स अनेक भए श्रुति गावै ॥ एक सों एक प्रता
पी महा जिन के जस सों मुनि चित ठगावै ॥ असो को उन भयोगि रिधारन विप्रन पा
ल की माहि लगावै ॥ तो सिर का सुरखाव को पंखे है जो यही ति अनीति चलावै ॥ ६४
॥ नहु स ॥ प्रनाम करि कै ॥ दोहा ॥ तुम मम गुरु के गुरु अहो असो कहौ न नाथ ॥ कृपा क
रै अपुनो समुहि मम गति तुमरे हाथ ॥ ६५ ॥ भृगु मुसुकाय के ॥ सवैया ॥ बालक सीक
हे वात मही पति ताहि विचारि कै क्यों मन लाइये ॥ को उन ही इत बालक है गिरिधार
न जो इहि भांति बुझाइये ॥ हौं तुं वदास हौं होहु क हार इहां वह लोक उ
की

न. ना.
४६

पके पाय पनाह हमारे हैं यों गुनि कै पनहीं पहिराइये ॥ ६५ ॥ नहुस ॥ हाथ जोरि कै ॥ दोहा
वडे दयाल घुपै करत प्रभु सँदेव यही त ॥ ता सों मैं विनती करी की जै रूपा विनीत ॥ ६७
पुलहा ॥ सवैया ॥ मीठी मनोहर वात निहारी सुने उर क्रोध हँसी मुख आवै ॥ अँसो कहै
तुम ही पति होय कै पागल जै से कोडित लावै ॥ सो चुहिये पहिले गिरिधारन परिकहे
तो नयों कहि जावै ॥ जौं गुरु होय दयाल सुभाव तो बेलों पाँव पुजावै ॥ ६८ ॥ नहुस ॥ वि
नय सहित ॥ दोहा ॥ हम अज्ञानी विज्ञ तुम अमहु सवै अपराधु ॥ पितु सुत दो सहिनाल
खत रूप करहु चित साधु ॥ ६९ ॥ पुलस्त्य ॥ सवैया ॥ देखहु तो जगस्वारथ के वस सोच
है जो जेहि के मून भावै ॥ नीति अनीति विचारे न हीं अति आतुर आंधरे के सम धावै ॥
पालकी मोके ॥ उठै वें कहै गिरिधारन आपहि बालवतावै ॥ होय जौं पुत्र पिয়ারो महा

कहनि ज

४६

तौ कहापितुतासों सिखा उखड़ावे ॥७०॥ नहुस ॥ हाथ जोरि कै ॥ दोहा ॥ सुनियत निरपरा
दहन छन विधि हर के भए सूत ॥ लघु मनो रथ पूरहिं वडे रिति सदा मति पूत ॥७१॥ अत्रि ॥
सवैया ॥ काम में भूलि रह्यो गिरिधारन तासों भली वुरी नाहिं विचारे ॥ आपनो ईहित
साधन चाहत ते से ईरितिके वै न उचारे ॥ है न सनेह को माजन पे नहिं सो करि हैं जिहि
धर्म सिधारे ॥ कंचन की श्रुति रत्न जरी जड़ को डिन डिनहिं पेढ में मारे ॥७२॥ नहुस ॥ चिं
ता सहित ॥ दोहा ॥ जाहि करौ सो इधर्म है नुम समरथ मुनि राज ॥ कामानुर मोहि जानि कै
होहु गरीब निवाज ॥७३॥ वसिष्ठ ॥ सवैया ॥ न सुरनाथ कहावत है नर होय कै ना क के मो
ग को लटै ॥ भागवडो अपनो गुनि कै वह रिति लै जा में न हीं यह धूटे ॥ काम की आनु
रि असी कहा गिरिधारन आपने मूलहि खूटे ॥ कंचन कुंडल असी न काम को जो पहि

न. ना.
५६

रेनिजकानहिंटूटे॥७४॥**नुहुस॥विनयसहित॥दोहा॥**सदाकृपाआएकरतनिजदासन
पैआप॥सोइकरिहोसुनिकैविनयसरिहोममहियताप॥७५॥**अगस्त॥क्रोधसहित॥**
सवैया॥एतोसवैसमुझावतंहैंजिमिहोयभलोसुराजनजाई॥पैमननेकुनआवति
हैगिस्थारनत्यागतनाहिंठिठाई॥याहिसोंनीचहिंऊंचोनकीजियेहोतंहैपाछेसोई
दुखदाई॥पांवकीधूरिजोऊंचीउठावोतौफेरिपरैनिजमस्तकआई॥७६॥**नुहुस॥वि**
तासहित॥अप्य॥तुमहोगुरुवरपूज्यकरहुवरनहुहितसोई॥पैहमथलविनकहत
कामवसमममतिखोई॥तासोंकैनिरलज्जकस्योअतिकरिठिठाई॥छमहुतौनअप
राधसवैजानहुमुनिराई॥नहिकरिहोतौनहिंमोरवसविनतीकरिहोमवन॥जौंज
ननिसुतहिपयदेइनहिंतौअखत्यारअहेकवन॥७७॥**सत्ररिसिंद्यासहित॥दोहा॥**

५६

तेरीव्याकुलतानिरखि दयाहोति है चित ॥ तासों जान उठाय हों पै विचारि लै हित ॥ १८ ॥
नहु स ॥ सानंद ॥ प्रनाम करि कै ॥ दोहा ॥ आपधन्य सरवग्यगुरु संत तदया निवास ॥ प्रभु वि
न को त्रै सो अपर करे दास दुख नास ॥ १९ ॥ इमि कहि कै ॥ चित्रांगद कों बुलाइ कै ॥ दोहा
तुम लावहु मम पालकी कृपा करि मुनिराय ॥ हम ता पर आसी न देखै मिलैं सची सो जा
य ॥ २० ॥ चित्रांगद ॥ जो आता ॥ इमि कहि कै निकस्यो ॥ फेरि प्रविश्यो पालकी स
हित ॥ सवैया ॥ अजत है परदा मखतूल के गल राजत मोति नमालकी ॥ ऊपर चारल
सेकल से जिन मै दुति भारी जवां हिर जालकी ॥ सो भान जात कही गिरिधार नन्यो
समतावनी वाहक चालकी ॥ वां स विसाल की कंचन लालकी सो महामुरपालकी पा
लकी ॥ २१ ॥ तव ॥ चित्रांगद ॥ प्रनाम करि कै ॥ दोहा ॥ यह हाजिर महाराज की खास पाल

ही

न. ना.
५०

कीजोन॥ अवयापेआसीनकैकरहुसचीठिगगोन॥२२॥ नहुस॥ सानंद॥ सन्नरि
सिनकोंप्रनामकरिकै॥ दोहा॥ यहआईममपालकीजनभयहरनमुनीस॥ अवजोअ
ज्ञामोहिकरौताहिकरौंधरिसीस॥२३॥ सन्नरिसि॥ दोहा॥ सावधानकैकैनहुसयापैंहो
हुसवार॥ हौंउठायलैचलतहौंइंद्रानीआगार॥२४॥ यहसुनिंकैनहुसप्रनामकरि
कैपालकीमेंवैळ्यो॥ तव॥ सन्नरिसिपालकीउठायकैलैचले॥ कञ्चुदूरवाएंचलिकैम
गमेंपंगकेपासपिपीलिकाकोंदेखिकैअगस्तठाठेकैरहे॥ तव॥ नहुस॥ सर्पसर्प॥ अ
गस्त॥ क्रोधसहित॥ दोहा॥ सर्पसर्पमोहिकहतैहैअरेतोहिवउदर्प॥ तातेंअवहीअवनि
मेंपतितहोसर्प॥२५॥ इतनोकहतनहुसपालकीसोंपथिवीपैंगिरिपख्यो॥ तव॥ न
हुस॥ सभय॥ हाथजोरिकै॥ दोहा॥ जोहमकियअपराधयहतासुदियोगुरुदंड॥ अव

५०

उधारममकीजियो प्रभु उर दया अखंड ॥ २६ ॥ अगस्त ॥ दया सहित ॥ दोहा ॥ तव कुल वै
हैं धरम न्य पधर्म राजव प्रखास ॥ तूतिन सों मिलि है जवै तव वै है अघ नास ॥ २७ ॥ ३
मि कहि कै सव निकरे ॥ ३ ति नहु सनाट के पंच मोडुः ॥ ५ ॥ तव प्रविसे ॥ ब्रह्मा और काला
मिमानी पुरय ॥ सुवैया ॥ हाटक सी दि पै देह की दीपति भूषन हीरन के वने गाता ॥ हंस
तं पै वै ठे प्रजा अव सल सै मुख ते जज्यो हंस प्रभाता ॥ ध्यान हिये गिरिधारन को उर में उ
पवीत वन्यो अवदाता ॥ चार भुजा महें पुस्तक चार लसे मुख चार उदार विधाता ॥ १ ॥ सा
वन मेघ सो रूप अनूप मया पक वै सोरख्यो नव खंड में ॥ पायन में थिरता को अभाव है
पीवरा तादर सै भुज दंड में ॥ जा सों न को उवली गिरिधारन विस्व विलात है जा के घमंड में ॥
काल लख्यो लिए दंड प्रचंड अखंड प्रताप भख्यो ब्रह्म मंड में ॥ २ ॥ ब्रह्मा ॥ दोहा ॥ कहहु का

न. ना.
५९

लया समय तु मद्रासन की बात ॥ भोगत सुरपति कै नृपति का भवितव अवतात ॥ ३ ॥
॥ कालाभि मानी पुरुष ॥ सोरठा ॥ कुंभज सा पहि पाय नहु स अवनि अजगर भयो ॥ अव
गुरु इंद्र बुलाय मख कराय दै हैं तिलक ॥ ४ ॥ ॥ ऐसे कहि नाचन लाग्यो ॥ इतने में प्रविसे
जयंत और चित्रांगद ॥ ब्रह्मा कों प्रनाम करि कै ठाठे भए ॥ ब्रह्मा ॥ दोहा ॥ जनक कुसल व
रनन करहु सबी सुअन मति मान ॥ पाप छुट्यो कै ना छुट्यो अहैं कौन अस्थान ॥ ५ ॥
जयंत ॥ छप्पय ॥ हत्या भय सों जनक मान सरमा हिलु काए ॥ तव इंद्रासन नहु समूप
गुरु नै वैठाए ॥ पुनि हम पै करि कृपा जुक्ति की नी मुनि राई ॥ मम माता महं प्रीति भूप के
उर उष जाई ॥ बडि सातरि सिन की पाल की बल्यो साप सों अहि भयो ॥ सुरपति बुला
य हरि पूजित वति नहि राज चाहत दयो ॥ ६ ॥ ब्रह्मा ॥ दोहा ॥ केहि विधि नृप धर मातमा

चह्नीपराईवाल॥ किमिमुनिजोरेपालकीकिमिमोसापितव्याल॥७॥ जयंत॥ दोहा॥
चित्रांगददेख्योइगनरखोपासताकाल॥ कहिहेयहभगवानसोंसोंचोअखिलहवाल॥
८॥ यहमुनि कै ब्रह्मानै चित्रांगदकी ओर देख्यो॥ तव॥ चित्रांगद॥ प्रनामकरिकै॥ छप्पय
जवजयंतसहजननिविनयबहुगुरुहिसुनाई॥ तवतिननेइनहेतुजुक्तिनूतनउपजा
ई॥ कहहुसचीगुननृपहिनारदहिवोलिसहेज्यो॥ कामपुहुमिपतिपासक्रोधकुंभज
पै॥ भेज्यो॥ इमिकह्योसविहिजोंदूतिकातोढिगपठवैनरमुकुट॥ तौकहेहुजोरिरिसि
पालकीआवहिंअवहीममनिकट॥९॥ ब्रह्मा॥ तवतव॥ चित्रांगद॥ छप्पय॥ तवना
रदनैनृपहिसचीगुनमहिमागाई॥ कामविवसबैगयोबोलिदूतिकापठाई॥ सचीक
हीगुरुकहीबुलाएतवरिसिराई॥ ममसिविकानुमवहहुजोरिकरविनयसुनाई॥ मुनि

न. ना.
५२

दयावंतमानी सोई च लतसर्पभाख्यो नृपति ॥ दिय सा पहि कुंभज को पवस गिल्यो नरनभो
सर्प अति ॥ १० ॥ ब्रह्मा ॥ सा चरज ॥ कवि ॥ देखहु तो भाग दीह नहु सन राधि पको नरतन
माहिं भयो सत्क सुरथान में ॥ वरुन कुवेर आदि अमरन पूजा दई किये भोग नाना फिल्यो
वैठिकै विमान में ॥ गिरिधर दास भनै एक देव एनी काज सा पसों भुजंग भयो धूरि परी
सान में ॥ मेरे जान इंद्र जीत हो नो है सहज सही इंद्र जीत हो नो अतिकठिन जहान में ॥
११ ॥ जयंत और वित्रांगद ॥ हाथ जोरि कै ॥ सत्य सत्य ॥ ब्रह्मा ॥ दोहा ॥ भली विचारी वा
त यह उर अंगि ए कुमार ॥ अव सुत गुरु सों पूछि कै करहु कुम अनुसार ॥ १२ ॥ जयंत ॥
प्रनाम करि कै ॥ जो आज्ञा ॥ यह सुनि कै ब्रह्मा और काला भिमानी पुरुष दो डिन करे ॥
तव ॥ प्रविसे वह स्पति ॥ जयंत नै उठि कै प्रनाम कियो ॥ गुरु नै आसि वाद दियो ॥ फेरि आ

५२

पुने आसन पर जाय वैठे ॥ तव ॥ जयंत ॥ हाथ जोरि कै ॥ दोहा ॥ तव प्रताप ते नहु सन्तप
मयो साप सों चाल ॥ अवकरुना करि कीजिये सुरपाल हि सुरपाल ॥ १३ ॥ गुरु ॥ दोहा
लेख राज के भाग को उदय देख सुकुमार ॥ अवै आसु अघनासि कै होत अमर भरता
र ॥ १४ ॥ जयंत ॥ सानंद ॥ प्रनाम करि कै ॥ दोहा ॥ दीन वंधु आरत सरन कृपा सिंधु तव
नाम ॥ क्यों न करहु निज भक्त पै करुना करुना धाम ॥ १५ ॥ गुरु ॥ साधु जयंत साधु ॥
तव प्रवि सी इंद्रानी और चेटी ॥ दोहा ॥ गुरु दयाल ही सों सची अभय होत बुधिसी वी
अमृत ही के पान सों अमर होत है जीव ॥ १६ ॥ इंद्रानी ॥ दोहा ॥ सखी सत्य तेरे वचन
यामैं संसय है न ॥ जन अपराध हि कोष में विन गुरु दया औ न ॥ १७ ॥ औ से कहत दो
उन नै जाय कै गुरु कों प्रनाम कियो ॥ गुरु ने आसि वा दियो ॥ तव जयंत नै उठि कै मा

न. ना.
५३

ताकों प्रनाम कियो ॥ इंद्रानी नैं आसि र्वा दियो ॥ तव ॥ इंद्रानी ॥ गुरु के निकट जाय हाथ
जोरि कै ॥ दोहा ॥ तुम दया ल सरवग्य प्रभु कियो नहु सको पात ॥ की जै करुना आसु आव
दी जै मम अहि वात ॥ १८ ॥ गुरु ॥ दोहा ॥ पुत्री अवसानंद करु व्रत अंतिम अस्नान ॥ वै
ठुनाथ संग जग्य मै भयो परम कल्यान ॥ १९ ॥ इंद्रानी ॥ सानंद ॥ दोहा ॥ पति कहें वो
लि पठाइये आप आपु ने पास ॥ मै मज्जन करि करति हौं निज सिंगार गत त्रास ॥ २०
गुरु ॥ सची साधु ॥ तव ॥ जयंत कों निकट बुलाय कै ॥ गुरु ॥ दोहा ॥ तुम सुत गवनहु जन
क पै कहहु सवै चत्तान्त ॥ नलिन नाल सों काठि कै इत लावहु सुरकांत ॥ २१ ॥ जयंत ॥
दोहा ॥ मान सरोवर के निकट हत्या अहे काल ॥ सो अति ही दुख देइ है कि मित्र हैं
सुरपाल ॥ २२ ॥ गुरु ॥ दोहा ॥ लिखितु लसी के पत्र पै कृष्ण अखर ए दोय ॥ सुरपति

५३

सिरधरिलाइयो नहिं मग वाधा होय ॥ २३ ॥ जयंत ॥ सानंद ॥ जो आजा ॥ इमि कहि
कै निकल्यो ॥ तव ॥ चित्रांगद कों बुलाय कै ॥ गुरु ॥ दोहा ॥ मंत्री कंचन वरन अहर विधन
दादिक देव ॥ राजकाज करता संवै इत लावहु कहि भेव ॥ २४ ॥ चित्रांगद ॥ प्रनाम करि
कै ॥ जो आजा ॥ इमि कहि कै निकल्यो ॥ तव ॥ बेटी पट अंतर करि कै इंदानी को सिंगार
करन लागी ॥ इतने में ॥ प्रविसे कृष्ण नाम लिखित तुलसी पत्र किरीट में लगाए इंदु औ
र जयंत ॥ दोइन नै ॥ गुरु कों प्रनाम कियो ॥ जीवने चिरंजीव कह्यो ॥ तव ॥ इंदु ॥ हाथ जो
रि कै ॥ दोहा ॥ संतत आप उदार गुरु महिमा अकथ अपार ॥ जन पै किमि न कृपा कर
हुसाधु दया आगार ॥ २५ ॥ गुरु ॥ दोहा ॥ अवतरे आए सुदिन गए कुदिन सुराज ॥ अ
स्वमेध करि दाहि अघ सक्त होहु सहसाज ॥ २६ ॥ अैसे कहि कै जयंत कों निकट बुला

नीचोसिरकरिकैरहिगई॥ इंद्रेनेइंद्रानीकीओरदेखिकै

न. ना.
५४

यकै॥ गुरु॥ दोहा॥ विप्रवरनकेआसएमजाहुपुत्रसरवत्र॥ अस्वमेधहितनेवतिकैति
नकहेंलावहुअत्र॥ २७॥ जयंत॥ जोआज्ञा॥ इमिकहिकैनिकस्यो॥ तव॥ पटअंतर
कोंखोलिकैनिकरींसिंगारकिएइंद्रानीओरचेटी॥ इंद्रानीगुरुकोंप्रनामकरिकैप
तिकीओरदेखिकैनैननमेंनीरभरे॥ इतनेमेंप्रविसेसूरजचंद्रमाअग्नीकुवेरवरन
जमकार्तिकैयकंचनवरनविसकरमाचित्रांगदसमेत॥ सवननैगुरुकोंप्रनामकि
यो॥ फेरिइंद्रकोंप्रनामकियो॥ गुरुनैसवनकोंआसिर्वाददियो॥ इंद्रसवनकोंकं
ठलगायकैमिले॥ तव॥ गुरु॥ कंचनवरनकोंबुलायकै॥ दोहा॥ राजसाजमखसा
जकोंसाजहुकंचनवर्न॥ विसुकर्माकहंसंगलैकरहु॥ इतिआचर्न॥ २८॥ कंचन
वरन॥ जोआज्ञा॥ ऐसेकहिविसुकर्मसिमेतसवसाजकोंसजनलाग्यो॥ फेरि

५४

सबतको

गुरुके निकट आयें कै ॥ हाथ जोरि कै ॥ कंचन वरन ॥ दोहा ॥ अस्वमेध को राज को सज्यो
साज मह राज ॥ अव जो करत व होय सो करियै मुनि सिर ताज ॥ २९ ॥ इतने प्रविश्यो मैं
ब्राह्मन न सहित जयंत ॥ गुरुके निकट जाय हाथ जोरि कै ॥ दोहा ॥ प्रभु आमु अनुसा
र मैं द्विजन निमंत्रन दीन ॥ आर सव संग मम मुनि वर धर मधुरीन ॥ ३० ॥ तव गुरु
ह नैं जथा जोग आसन वै ठायो ॥ इतने मैं ॥ ने पथ्य मैं ॥ परम प्रकास भयो ॥ तव ॥ गुरु ॥
दृष्टि दें कै ॥ दोहा ॥ परम तेज ग्लमल तन भना स्या तम सर वत्र ॥ मोहि बुझात है या समै
क स्य प आवत अत्र ॥ ३१ ॥ इतने मैं प्रविसे क स्य प ॥ सवैया ॥ गोरो वन्यो तन कंचन के
सम सी सजटा मैं प्रसून लपेटा ॥ उज्जल धोती लसै उपरै नाहिये बट सास्त्र को सार
समेदा ॥ ध्यान धरे गिरिधारन को मुख सो है स संक कलंक ज्यों मेटा ॥ बारहु ओर

न. ना.
५५

मरीचिप्रकासतकस्यपसोहेमरीचिकेवेदा॥३२॥तवगुरुनै॥उठिकै॥नमस्कारकियो॥
कस्यपनमस्कारकरिकै॥गुरुकेसहितएकआसनपरवैठे॥तव॥इंद्रादिसवदेवननै
कस्यपकोंप्रनामकियो॥कस्यपनेसवकोंआसिर्वाददियो॥तव॥कस्यप॥सानंद॥
गुरुकीओरदेखिकै॥दोहा॥तवमहिमाकोकहिसंके॥उरमैंदयाविसेस॥देख्योदेख्यो
आजसोसकहिकरतसुरेस॥३३॥गुरु॥सानंद॥दोहा॥जीवंदेवआधीनहैसोसवजा
नतआप॥अवइंद्रासनउचितइहिरह्योइतेदिनपाप॥३४॥कस्यप॥सत्यसत्य॥गु
रु॥अडिह्य॥सुरपतिमाख्योचत्रविप्रहत्यालगी॥पूख्योताकोकालअवैकिसमतज
गी॥तासोंकरिहयमेधपापविनकीजियै॥तवइंद्रासनतिलकसुरेसहिदीजियै॥३५
कस्यप॥सानंद॥साधुसाधु॥तव॥गुरुऔरकस्यपइंद्रइंद्रानीकोंसवब्राह्मननसहित

५५

संगमें लै कै चौकमें जाय बैठे ॥ अस्वमेध को आरंभ करिवे लगे ॥ तव ॥ कस्य प ॥ दोहा ॥
अस्वमेध करिवे विहित कुसुमाकर के माहिं ॥ तासों ताहि बुलाय कै करहु जग्य छति नाहिं
३६ ॥ ऐसे सुनि कै गुरु वसंतरितु को ध्यान धारन लागे ॥ इतने में प्रविश्यो वसंत ॥ गुरु कों
प्रनाम करि कै ठाठो भयो ॥ गुरु ॥ दोहा ॥ अस्वमेध करिवे वहत अघनासन हित तात ॥
तासों तुम इत ही रहहु लखहु जग्य अवदात ॥ ३७ ॥ वसंत ॥ जो आजा ॥ तव ॥ गुरु नैसव
विप्रन समेत जग्य आरंभ कियो ॥ दोहा ॥ प्रथम जज्ञ निरविघ्न हित करि संकल पडदा
र ॥ पूज्यो पूंगी फल विषे गिरि जागन भरतार ॥ ३८ ॥ तव ॥ एक आसन पै कुंकुम सों सो
लह्यारवनाए ॥ दोहा ॥ थापी सों लहमात्रिका अछत राखि प्रवीन ॥ अर्घपाद्य आदि
कसवै पूजातिन की कीन ॥ ३९ ॥ कुंकुम को दै विंदु पुनि पूरव भीति मरार ॥ छत मात्रि

न. ना.
५६

का अवाहिकै पूजी दै छतधार ॥ ४० ॥ तव ॥ एक आसन पै कंकुम सों नव को छलिल्यो ॥
दोहा ॥ रविससिकुज बुधजीवक विमंद एहु अरु केतु ॥ नवग्नहक्रम सों थापिकै पूज्यो मं
गल हेतु ॥ ४१ ॥ तव ॥ प्रधान देवता को थापन प्रारंभ कियो ॥ कवित्त ॥ गेहूं मूंग का कुनी उ
डुदतिल जवधान सप्तधान को अनूप चौतरावनायो है ॥ लाल मोती मूंगा पन्ना पद्म
रागवज्र नीला तापै सख तो भद्र मंडल ~~का~~ रचायो है ॥ गिरिधर दास बांधि पल्लव की
तोरन को रंभ खंभ राखिकै वितान को तनायो है ॥ बीच में प्रधान देव रमारमा प्रानपति
सहित विधान सावधान पधायो है ॥ ४२ ॥ ताके दस दिशि या पे दस दिशि पालन को
पूरव में इंद्र जौन आपु जिजमानवर ॥ अग्नि माहिं अग्नि जमराज दिसा दक्षिण में
नैरित में निरित प्रतीची जल नानकर ॥ वायव में वाय औ ईदीची माहिं जछराय

५६

गिरिधरदासत्योंइसानमेंइसानहर॥३॥रधप्रजेसअधोदेसमाहिंसेसथापिपूज्योअ
मरेसनैविसेसकुसथानपर॥४३॥तवस्वस्तिवाचनकोआरंभकियो॥छप्पय॥कनक
कलसकहंथापिमख्यौतीरथकोपानी॥सरवौसधिअरुपंचरत्नगख्यौमधिआनी॥४॥
परपद्मवपंचधरेकोमलसुखदानी॥पूर्णापात्रकहंराखिधख्यौश्रीफलविग्यानी॥४॥
जचारचारवरनीलईपानगंधअच्छतकनक॥सहप्रीतिस्वस्तिवाचनपढ्यौजिमिन
विघ्नहोवैतनक॥४४॥तवजग्यकोसाजसजनलागे॥छप्पय॥कुसुमगुडसरकरास
नुजलतंदुललाजा॥सोमसमिधसाकलसज्योमखलायकसाजा॥शुवाप्रौंछनी॥
खलआदिवहुपात्रविराजै॥पूजनसामासवैकनकखंभाछविछाजै॥वरधुजापताका
फरहरैकदलीलसैसुहावने॥३॥मिरच्यौजग्यसानंदगुरुमधितियसहसुरपतिवने॥

न. ना.
५७

४५॥ पतनी सहजि जमान न्हाय कै दिखली नी ॥ गृह आचार जम ए प्रथम वर वरनी दीनी ॥
ब्रह्माकस्य पलसे अपर मुनि भे उदगाता ॥ पुनि अध्वरज सदस्य भए होता बहु ज्ञाता ॥
अपने अपने अधिकार पलसे वेद अनुसार सब ॥ करि प्रथम संकलप जग्य को कि
यह यमेध आरंभतव ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ जग्य हेत महि सोधि कै रचिवर वेदी कुंड ॥ सविधि अ
ग्निथापन कियो मंत्र पठत द्विज कुंड ॥ ४७ ॥ मख वेदी के दिसन मै वलि दिसि पालन दी
न ॥ श्रेत्र पाल वलि दीप सह वाहर धरी प्रवीन ॥ ४८ ॥ जग्य भयो आरंभ जवत वज गजी
तन काज ॥ त्या गोसिर पर पत्र लिखि स्याम करन हय राज ॥ ४९ ॥ सो सब सभा मै फिरि फे
रि निकल्यो ॥ दोहा ॥ इमि सत मख हय मख कियो दर्द छिना मूरि ॥ लीनी आसि खदु जन
सों ॥ ५० ॥ इति आनंद पूरि ॥ ५० ॥ इतने मै ॥ ने पथ्य मै ॥ दोहा ॥ मै प्रसन्न हौं भक्ति लखितो

५७

पै निरजरपाल ॥ मनभावतवरमांगुअवदैहौं तो कहें हाल ॥ ५१ ॥ यह आकासवानीसव
 ननैकानदैकै सुनी ॥ तव ॥ गुरु ॥ सानंद ॥ दोहा ॥ यह नारायन आ पुँ सुदेव भगवान ॥
 तोहि देत वर अमर वर मांगुअ वहिं मनमान ॥ ५२ ॥ तव ॥ इंद्र ॥ सानंद ॥ ३४ कै प्रनाम क
 रिकै ॥ दोहा ॥ मोहि ब्रह्म हत्या लगी करियै ताको नास ॥ मम आसन मो दीजियै माध
 व जगत निवास ॥ ५३ ॥ तव ॥ नेपथ्य मैं ॥ अैसे इहोय ॥ यह सुनि कै इंद्र नै प्रनाम कियो ॥ त
 व ॥ गुरु ॥ सानंद ॥ दोहा ॥ पापरहित अवतु मभ एक रिप्रसन्न भगवान ॥ बैठहुअ पने आस
 नहिं करहुअ मरकल्यान ॥ ५४ ॥ अैसे सुनि कै इंद्र इंद्रानी सहित इंद्र सन पै जाय बैठे ॥
 तव गुरु नै राजतिलक कियो ॥ हरि गीती ॥ गुरु राजटी को कियो जव सुराज को हरया
 य कै ॥ तव मुदित बितसव अमर वर से पू लवहु रंग लाय कै ॥ दुंडुभिदमामे तूर डोल

न. ना.
५८

मृदंगवहुवाजेवजे ॥ लखिजाचकनधनदियोसुरपतिदानलहिरिदमजे ॥ ५५ ॥ इत
नेमें प्रविश्यो सुदासनचोपदार ॥ प्रनामकरिठासोभयो ॥ तव ॥ सबदेवननैभेटदीनी ॥ सु
दासननैपथकपथकहाजरीवोली ॥ इंद्रनैभेटलीनी ॥ तव ॥ कस्यप ॥ दोहा ॥ अवसुतह
मजैवेवहतनिजआश्रमतपहेतु ॥ करहुएजसानंदतुमनीतिविवेकसमेतु ॥ ५६ ॥ इंद्र ॥
सानंद ॥ जोआज्ञा ॥ तव ॥ गुरु ॥ दोहा ॥ हमहुंजायेंहैनिजसदनब्राह्मनचंदसमेत ॥ कर
हुएजसानंदहैसुरपतिनीतिनिकेत ॥ ५७ ॥ इंद्र ॥ सानंद ॥ जोआज्ञा ॥ अैसेमुनिकस्य
पञ्चगुरुब्राह्मननसहितनिकरे ॥ तव ॥ इंद्र ॥ सानंद ॥ आत्मगत ॥ दोहा ॥ अहो धन्यवड
भागहमगुरुगोविंदसहाय ॥ द्विजहत्याडैवारलहिनासीसाजिउपाय ॥ ५८ ॥ प्रकास
॥ दोहा ॥ सुनहुसभासदअवनदैगुनहुसत्यमनमाहि ॥ जिहिगुरुदेवसहायहैंतिहिदु

५८

हमकथुनाहिं॥५९॥सभासद॥सत्यसत्य॥तव॥इंद्रानी॥सानंद॥दोहा॥धन्यधन्यदिन
आजकोमंगलमयमहाराज॥जोहमपियदरसनलख्यौपूख्यौसवमनकास॥६०॥इंद्र॥
सानंद॥दोहा॥सवदिनइकसो नारहे प्यारीसमरुहसोय॥पूख्यौसदानतोरईसावनस
दानहोय॥६१॥इंद्रानी॥सानंद॥सत्यसत्य॥तव॥जयंत॥प्रनामकरिकै॥दोहा॥जनक
आजदिनसुखजनकअहेकनककोचारु॥जोसिंहासनपैलखतमुदितअमभरतारु
६२॥इंद्र॥सानंद॥प्रत्रकेमाथेपरकरफेरिकै॥दोहा॥तनयतिहोरभागसोंमोहिमित्यो
सुराज॥अवदुखगतदैकरहुतुमविविधभोगसहसाज॥६३॥जयंत॥सानंद॥हाथ
जोरिकै॥दोहा॥पूजनपितुपदपदुमकोमोहिसुखभोगसदैव॥यहमांगतकरजोरिकै
रहैंसदयनितदैव॥६४॥इंद्र॥साधुसुतसाधु॥तवकंचनवारन॥दोहा॥अवसंध्याको

न. ना.
५८

काल है अस्त होत गहराज ॥ सभा विसर्जन की जियै महाराज सुराज ॥ ६५ ॥ इंद्र ॥ दोहा ॥
साँच कहत कंचन वरन अहे अर्घ को काल ॥ उचित सभा वरखास अव अस्त होत दिन पा
ल ॥ ६६ ॥ अैसे कहि सभा की ओर हेरि कै ॥ दोहा ॥ अवनि जनिज मंदिर सवै गमन करहु तु
म देव ॥ हमहुं जात पूजा सदन अर्घ काल यह एव ॥ ६७ ॥ सभा सद ॥ सत्य सत्य ॥ अैसे क
हि सव इंद्र कों प्रनाम करि कै निकरे ॥ तव ॥ इंद्रानी जयंत ॥ उठि कै दहि नीदिसि पूजा ग्रह
मैं गए ॥ तहां संध्या वंदन करि फेरि आपुने आसन पै संची समेत जाय वैठे ॥ इतने मैं ॥
ने पथ्य मैं ॥ महा कलकल भयो ॥ तव ॥ इंद्र कान दे कै ॥ दोहा ॥ होत शब्द महि की दिसा सुंद
र पट हसमान ॥ आवत को उधर मात माहरि पुरहित बढि जान ॥ ६८ ॥ इतने मैं ॥ प्रविष्टो
विमान पै वैठो नहुस ॥ तव ॥ इंद्र ॥ दोहा ॥ कोतुम दिव्य सरीर हौ कहां जात बढि जान ॥ नर

सहित

५८

कैसुरकै असुरवर किय कह धरम महान ॥ ६९ ॥ नहुस ॥ अथ ॥ हम विधुवंसी नहुसना
मनरनायक भारी ॥ तुव आसन दिविल ह्यौ लुके तुम जव मधि वारी ॥ ७० ॥ निइंद्रानी चाहि
सापकुं भज सों पायो ॥ अजगर को तन मिल्यो हजार नवर सवितायो ॥ नृपधरम हो ज
को दर सलहि मिल्यो साप दारुन परम ॥ अव जात धाम भगवान के यह हम निज भा
ल्यो मरम ॥ ७१ ॥ इंद्र ॥ साच राज ॥ दोहा ॥ साधु साधु नरपाल तुम हो अति भाग निधान ॥
नरतनु सुराज हिल ह्यौ अंत चले हरियान ॥ ७२ ॥ नहुस ॥ सानंद ॥ दोहा ॥ अव तुम निज
राजहि करहु सो दसहित सहसाज ॥ हम हरि डिग गवनत अहैं स्वस्ति होय सुराज ॥ ७३ ॥
अैसे कहि विमान सहित निकस्यो ॥ तव ॥ इंद्र ॥ इंद्रानी की ओर देखि कै ॥ दोहा ॥ विष्णु रूपा
सों हम लह्यो राजसाज सुख पूरि ॥ ता सों बलि भगवान डिग करिय वंदना भूरि ॥ ७४ ॥

न. ना.
६०

इंद्रानी॥सानंद॥दोहा॥मलीविचारीआपुमनहरिजगगतिपरम॥तिनकोअरचन
सवहिविधिअहेपरमकल्यान॥७४॥जयंत॥दोहा॥विधिविधुपरआदिकसवैसेवतप्र
मुपदपन्न॥तासोंगुनिअपनोमलोचलोचतुरमुजसक॥७५॥इंद्र॥सानंद॥सत्यस
त्य॥इमिकहिकैसवनिकरे॥इतिनहुसनाटनेष्योके॥६॥दोहा॥श्रीगिरिधरपद
पदुमरजसिरधरिसहितहुलास॥रच्योनहुसनाटनेकनवल्ललघुमतिगिरिधरदास॥१॥
इतिश्रीगिरिधरदासविरचितंनहुसनहुकसप्रम॥सुभमस्तु॥संवत॥१९१४॥आव
राशुक्त॥द्वादश्यां॥१२॥रविवासनेलिखित॥गोविंदप्रशादखत्री॥॥श्रीकृष्णः॥

६०